भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति

महिला प्रकोष्ठ 'सम्बल' जोधपुर

उड़ान स्मारिका

Come, design your dream wedding with us!!

Destination Weddings | Theme Weddings | NRI Weddings

Jodhpur - Udaipur - Jaipur - Jaisalmer - Mumbai - Delhi - Goa

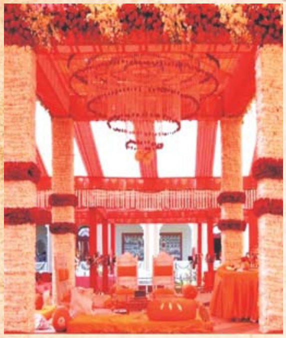

Ever thought of getting married like a prince or a princess, in a palace or a castle? Most of us have a 'dream wedding' woven in our minds, but do all dreams come true? Certainly. We are here to turn your dream into a reality with a touch of 'Perfexion'.

From the chatter filled Mehendi to the glitzy and glamorous Sangeet, to the elegant reception and the beautiful mandap, everything can be taken care of. We respect your emotions, value your traditions, celebrate your rituals, listen your suggestions, understand your needs, care for your budget, deliver to the expectations, and propose the best to make your dream wedding come true…!!

PERFEXION

WEDDING PLANNERS | EVENT ORGANIZERS

Contact us:

CA Anil Bohra : +91-98290-21879
ER Ashish Bohra : +91-78910-87500
Phone: +91-291-2634528, 2431879

Perfexion Events Company Pvt.Ltd.

G-21, Shastri Nagar, Jodhpur (Rajasthan)
email : info@perfexionevents.com
website : www.perfexionevents.com
FB Page : Perfexion Events

We also have Branch Offices at:
Mumbai & Gurgaon

Follow us on:

You ask it, we do it!
Venue Selection
Theme & Décor, Catering
Music and Entertainment
Artist Management
Wedding Invitation
Travel & Logistics
Guest Hospitality
Photography
Light & Sound
and many more...

उड़ान स्मारिका

भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति

महिला प्रकोष्ठ 'सम्बल' जोधपुर

दशरथमल सिंघवी की हवेली, हाथीराम का ओड़ा, जोधपुर
फोन : 0291-2551157, 5108799, 9414133879 ईमेल : sushilapbohra@gmail.com

सुशीला बोहरा
सचिव

महारानी हेमलता राजे
संरक्षक

रेणु हीरावत
अध्यक्ष

डॉ. सावित्री डागा
उपाध्यक्ष

नीलम मेहता
उपाध्यक्ष

चन्द्रा मेहता
सह-सचिव

सुचेता कानूनगो
सह-सचिव

मंजुला शाह
कोषाध्यक्ष

सदस्यगण

अमरकौर

बीना लालस

अनुराधा आडवानी

ललिता सचेती

अरूणा चौधरी

आशा सिंघवी

माला राठौड़

मंजु जैन

कल्पना सिंघी

Messages

सत्यमेव जयते

वसुन्धरा राजे

मुख्यमंत्री राजस्थान

भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति महिला प्रकोष्ठ 'सम्बल' जोधपुर को उनकी स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

बेसहारों का सहारा और उनकी जीविका के उपार्जन में मददगार बनने से बड़ा सुख और कोई नहीं। भाग्यशाली होते हैं वे लोग जो निर्बल का बल बनते हैं। स्वरोजगार से जोड़कर हम न केवल असहाय लोगों का मनोबल बढ़ाते हैं बल्कि उन्हें मान-सम्मान, यश और प्रतिष्ठा भी दिलाते हैं।

यदि सही मार्गदर्शन मिले तो महिलाएं अपनी क्षमताओं और योग्यताओं के बल पर बहुत कुछ अर्जित कर सकती हैं। इससे हम समाज की विशिष्ट उपलब्धियों में उनकी भागीदारी बढ़ा सकते हैं।

आशा है, सम्बल का बल हमेशा समाज के वंचित वर्ग को उत्साहित कर उन्हें मुख्य धारा से जोड़ता रहेगा।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करती हूँ।

वसुन्धरा राजे

सत्यमेव जयते

अशोक गहलोत

पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (महिला प्रकोष्ठ) ''सम्बल'' के 25 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर 13 फरवरी, 2016 को रजत जयन्ती समारोह का आयोजन किया जा रहा है। साथ ही इस अवसर पर एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है।

विकलांगों एवं पीड़ित मानवता की सहायतार्थ संचालित संस्था के महिला प्रकोष्ठ के रजत जयन्ती समारोह का आयोजन अपने आप में महत्वपूर्ण है। इससे संस्था की अब तक की उपलब्धियों को व्यापक बनाने के साथ ही भावी योजनाओं पर विचार-विमर्श का मार्ग प्रशस्त होता है।

आशा है स्मारिका की सामग्री संस्था द्वारा जनहित में किये गये कार्यों के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण एवं जनकल्याण के विभिन्न कार्यों में अधिकाधिक जनसहभागिता की भावना विकसित करने में सहायक होगी।

मैं समिति के सभी पदाधिकारियों को संस्था की रजत जयन्ती पर बधाई देते हुए स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूँ।

अशोक गहलोत

गजसिंह

महाराजा
मारवाड़, जोधपुर

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (महिला प्रकोष्ठ) ''सम्बल'' जोधपुर के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में रजत जयन्ती समारोह का आयोजन किया जा रहा है तथा इस अवसर पर एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है।

''सम्बल'' संस्थान महिलाओं के सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता एवं आत्म सम्मान के लिए तथा उनसे जुड़े मुद्दों पर कार्य करती है। इस संस्था द्वारा महिलाओं को विविध रोजगार प्रदान कर स्वतन्त्र रूप से छोटे व्यवसाय करने का सुअवसर प्रदान किया जाता है। जिससे महिलाओं की स्थिति, उनके मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा में सुधार होने के साथ-साथ बच्चों की शिक्षा तथा स्वास्थ्य में भी सुधार हुआ है। जिसके लिए इस समिति के समस्त पदाधिकारी बधाई के पात्र हैं।

मैं इस ''रजत जयन्ती समारोह के भव्य आयोजन तथा इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

गजसिंह

सत्यमेव जयते

डी.आर. मेहता

पूर्व सेबी चेयरमेन

Messages

सम्बल एक अद्‌भुत सामाजिक संस्थान है। इसका आधार है अनुकम्पा। इसका लक्ष्य है साधनहीन विधवाऐं, परित्यक्ताऐं एवं अन्य महिलाएं जो तकलीफ में हैं। ऐसी महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाना। छः हजार से अधिक ऐसी महिलाओं को अपने पैरों पर खड़ा किया है, बहुत बड़ा कार्य हुआ है।

सम्बल की एक विशिष्ठ प्रणाली है। महिलाओं का चयन स्थानीय महिलाओं के द्वारा किया जाता है। कम से कम पूंजी नियोजन/सहायता से ऐसी महिलाओं को आर्थिक रूप से सम्बल सक्षम बनाती है। अन्य सरकारी व गैर सरकारी योजनाओं की तुलना में सम्बल की योजना बहुत ही कम खर्च वाली है। फिर यह योजना पूर्ण रूप से विकेन्द्रित है।

सम्बल की एक अन्य विशेषता यह भी है कि लाभान्वित महिलाओं की प्रगति पर ध्यान रखा जाता है और आवश्यकतानुसार पुनः सलाह व सहायता दी जाती है।

लाभान्वित महिलाओं का जीवन ही बदल गया। पर्याप्त आमदनी हो गई। बैंक अकाउंट खोल दिये, पक्के घर बना दिये। बच्चे और विशेष रूप से बच्चियां स्कूल जाने लगीं।

श्रीमती सुशीला बोहरा के जुनून, अथक प्रयासों और नीतियों का फल है, सम्बल का विकास और सफलता। उनके सहयोगियों का भी बहुत बड़ा योगदान है।

सम्बल की कार्य प्रणाली भी बहुत नैतिक है।

सम्बल की रजत जयन्ती के अवसर पर मैं, जिसका भी सम्बल से उसकी स्थापना से आज तक का घनिष्ठ सम्बन्ध है, श्रीमती सुशीला बोहराजी और उनके सब सहयोगियों को बधाई देता हूँ और सम्बल की अधिकाधिक उन्नति के लिए मंगल कामना करता हूँ।

डी.आर. मेहता

घनश्याम औझा

महापौर, जोधपुर

Messages

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (महिला प्रकोष्ठ) ''सम्बल'' जोधपुर दिनांक 13 फरवरी 2016 को अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण करने जा रही है।

भगवान महावीर विकंलाग सहायता समिति महिला प्रकोष्ठ 'सम्बल' ने महिलाओं के सर्वांगीण विकास तथा सामाजिक, आर्थिक उत्थान के लिए अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं दी हैं।

श्री महावीर विकलांग सहायता समिति (महिला प्रकोष्ठ) ''सम्बल'' द्वारा इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा हैं। आशा करता हूं कि यह स्मारिका जोधपुर के नागरिकों, महिलाओं एवं विकलांगों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं परमपिता ईश्वर से इस स्मारिका के सफल होने की कामना करता हूँ तथा आपके इस अथक प्रयास के लिए आपको हार्दिक शुभकामनाएं ज्ञापित करता हूँ।

घनश्याम औझा

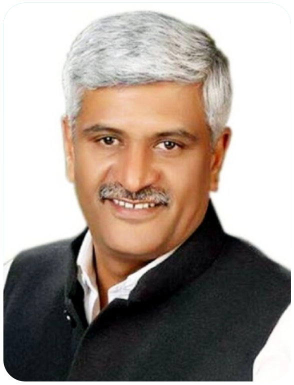

सत्यमेव जयते

गजेन्द्र सिंह शेखावत

सांसद, जोधपुर

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (महिला प्रकोष्ठ) 'सम्बल' जोधपुर के 25 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं।

'सम्बल' ग्रामीण क्षेत्र एवं झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाली विशेषकर विधवा, परित्यक्ता एवं तलाकशुदा महिलाओं की पहचान कर उन्हें स्वरोजगार के लिए आर्थिक मदद प्रदान कर रही है। साथ ही अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के माध्यम से महिलाओं व बालिकाओं को शिक्षित कर रही है। आपका यह अथक प्रयास समाज के लिये अनुकरणीय एवं सराहनीय हैं।

'सम्बल' द्वारा इस शुभ अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। स्मारिका में प्रकाशित सामग्री सभी के लिये अत्यन्त उपयोगी एवं सार्थक सिद्ध होगी। मैं आयोजन की सफलता एवं इस शुभ अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

गजेन्द्र सिंह शेखावत

Messages

सत्यमेव जयते

नारायण लाल पंचारिया

संसद सदस्य (राज्य सभा)
प्रदेश महामंत्री - भा.ज.पा. राजस्थान

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (महिला प्रकोष्ठ) ''सम्बल'' द्वारा समाज सेवा के क्षेत्र में अपने 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में, समिति द्वारा रजत जयन्ती समारोह आयोजित किया जा रहा है। इसके लिये समिति के पदाधिकारियों एवं सभी सदस्यों को बधाई।

भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (महिला प्रकोष्ठ) द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को स्वरोजगार हेतु प्रेरित करते हुए आर्थिक सहयोग एवं प्रशिक्षण केन्द्रों की अनेक योजनाओं को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाने में सहयोग कर रही है।

रजत जयन्ती समारोह में स्मारिका का विमोचन किया जा रहा है, मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन एवं समिति द्वारा महिला सशक्तिकरण हेतु किये जा रहे कार्यों के लिये हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

नारायण लाल पंचारिया

सत्यमेव जयते

सूर्यकान्ता व्यास

सदस्या राजस्थान विधानसभा
सूरसागर क्षेत्र, जोधपुर

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि भगवान महावीर विकलांग समिति (महिला प्रकोष्ठ) ''सम्बल'' जोधपुर के 25 वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयन्ती समारोह में स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

जैन समाज के लोगों का सामाजिक सरोकारों में दान के माध्यम से योगदान अर्वाचीन है, जैन समाज में अर्जित धन की यथार्थता दान में ही समझी जाती है। इन सभी संस्कारों का मजबूत आधार उनका त्याग आधारित धर्म है। सुशीला बोहरा के नेतृत्व में सम्बल संस्था ने दिव्यांग मानवों के जीवन में नया प्रकाश किया है। ऐसे ठोस सेवा कार्यों का लगातार 25 वर्ष तक निरन्तर बढ़ते कार्य क्षेत्र के साथ निर्वहन बहुत ही विलक्षण उदाहरण है।

परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि सुशीला जी बोहरा के नेतृत्व में सम्बल संस्थान की टीम महिलाओं की सेवा का कार्य शिव भाव से करें और इसके प्रतिफल में दिव्य आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करे। मैं स्मारिका के सफल और उद्देश्यपूर्ण प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित कर रही हूँ।

सूर्यकान्ता व्यास

सत्यमेव जयते

कैलाश चन्द भंसाली

विधायक - जोधपुर शहर

मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हो रही है कि भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (महिला प्रकोष्ठ) ''सम्बल'' के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में 13 फरवरी 2016 को रजत जयन्ती समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर एक ''स्मारिका'' का विमोचन किया जा रहा है।

मैं ईश्वर से यह कामना करता हूं कि आपके द्वारा प्रकाशित की जाने वाली यह स्मारिका का उद्‌देश सफलता पूर्वक पूर्ण हो और नये आयाम स्थापित करे।

इस महत्वपूर्ण कदम के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं

कैलाश चन्द भंसाली

Messages

हेमलता राजे

महारानी हेमलता, राज्ये
मारवाड़, जोधपुर

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति जोधपुर के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में दिनांक 13 फरवरी 2016 को रजत जयन्ती समारोह के आयोजन पर एक स्मारिका का विमोचन किया जा रहा है।

इस स्मारिका में महिलाओं के कल्याण हेतु स्वरोजगार के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारियां तथा इस समिति की गतिविधियों की पूर्ण सूचनाऐं प्रकाशित की जाएंगी।

इस समिति द्वारा निष्काम एवं समर्पित भाव से की जा रही सेवाओं से महिलाओं को सम्बल प्रदान करने से लाभकारी अवसर प्राप्त होंगे।

मैं इस रजत जयन्ती समारोह के सफल आयोजन एवं स्मारिका के सफल विमोचन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

हेमलता राजे

सम्पादकीय....

सम्मानीय,

ममतामयी, स्नेहमयी नारी बिना समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती। उस समाज निर्मात्री नारी के चेहरे में प्रसन्नता की लहर देखने हेतु सागर में से बिन्दु सदृश्य कुछेक बहिनों के आंसुओं को किंचित पोंछने का प्रयास सम्बल संस्था ने किया है। जिसकी विकास यात्रा प्रगति के सोपान की पुकार से परिपूर्ण अतीत से गुजरते हुए गौरवपूर्ण रजतमय वर्तमान यौवन में प्रवेश कर भविष्य की महत्वाकांक्षी योजनाओं को स्वर्णिम करने का स्वप्न संजोए हुए है। जीवन वस्तुतः अतीत की सीख, भविष्य की खोज के बीच वर्तमान का सुनहरा पल है।

संस्थान की 25 वर्षों की रजत यात्रा को अति स्मरणीय बनाने हेतु अनुदानदाता, सरकारी एवं गैर सरकारी साथियों, कार्यकर्त्ताओं तथा आदरणीय सुशीलाजी की सकारात्मक, सृजनात्मक उत्साह एवं उमंग से भरी ऊर्जापूर्ण गतिविधियों का प्रवाह पल्लवित संदेशों, चित्रों के माध्यम से जन–जन तक पहुंचाने का प्रयास इस रजत जयन्ती स्मारिका ''उड़ान'' में किया गया है। इस अवसर पर मैं उन सभी सुज्ञ पाठकों, विज्ञापनदाताओं तथा विशेषकर उन भामाशाहों को धन्यवाद देना चाहूंगी जिनके कारण सम्बल संस्थान इस मुकाम पर पहुंचा है। मैं एवरग्रीन प्रिण्टर्स को भी आभार प्रकट करना चाहूंगी जिन्होंने इसे सुन्दर कलेवर प्रदान किया है। आशा है आपको यह अवश्य पसन्द आएगी।

संस्थान की प्रगति एवं प्रतिष्ठा हेतु पूर्ण सहयोग की आकांक्षा के साथ अन्त में यही कहना चाहूंगी–

नारी अंधेरी रात्रि का टिमटिमाता तारा है, और सुबह की लाली का सुनहरा प्रकाश है
अरे यह तो शबनम की वह बूंद है जिससे कांटों का कलेवर भी
मोतियों का हार बन जाता है।

सुशीला बोहरा

माला राठौड़

ललिता संचेती

अनुराधा आडवाणी

अध्यक्ष की कलम से...

नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत पग नग तल में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो, अवनि और अम्बर तल में।।

सूर्यनगरी के रूप में विख्यात जोधपुर की यह पावन धरा जिसकी अपणायत विश्व प्रसिद्ध है। उस नगरी में हमारी बहिनों के लिए कुछ कर गुजरने की अभिलाषा ने सम्बल रूपी पौधें का निरूपण आदरणीय पद्मभूषण डी.आर. मेहता साहिब तथा सुशीला जी ने उस समय किया जब महिलाएं चार–दीवारी से बाहर निकलने में हिचकिचाती थीं, अपने अभाव को आह की ओट में निकाल कर सिमट जाती थीं। सम्बल ने उनकी आह को वाह में बदलने का प्रयास आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराजसा से आशीर्वाद लेकर धार्मिक स्थल के निकट 35 महिलाओं को स्वरोजगार देकर अर्पण किया जो 6000 महिलाओं तक पहुंच गया है। इसके साथ ही महिलाओं से सम्बन्धित स्वास्थ्य, शिक्षा, बाल विवाह, लड़के–लड़की में भेदभाव आदि समस्याओं को दूर करने के लिए सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं, विभागों से सहयोग भी प्राप्त किया। मैं दूर मुम्बई में रहती हूं लेकिन दिल से मैं और मेरे पति संस्था के नजदीक हैं।

प्रारम्भ से प्रस्तुति तक हमारे प्रेरणा स्त्रोत आदरणीय डी.आर. मेहता साहिब तथा सुशीला जी बड़ी निष्ठा एवं सेवा भावना से इस सेवा यज्ञ में जुड़े हुए हैं। वे दोनों ही बड़े सरल, सहज, सौम्य एवं संवेदनशील हैं इसलिए भामाशाहों, दानदाताओं तथा सहकर्मियों के साथ मिलकर सम्बल को आकाश तक पहुंचाने में कार्यों की पंखों से ''उड़ान'' भर रहे है, इसलिए कहना चाहूंगी –

कौन कहता है कि आकाश में छेद नहीं होता
अरे एक पत्थर प्रेम से उछालो तो सही।।
अरे कौन कहता है कि नारी कुछ कर नहीं कर सकती
एक बार उन्हें काम करने का अवसर देकर देखो तो सही।।

रेणु हीरावत

सचिव
की कलम से

भगवान महावीर विकलांग समिति की स्थापना पद्मभूषण डी. आर. मेहता की कार दुर्घटना से पैर की चोट ने, 1975 में एक संस्था का उद्भव कर दिया जो आज देश के अधिकांश प्रांतों में करीब 1½ करोड लोगों के अलावा विश्व के 28 देशों में 50 से अधिक कैम्प करवाकर 21000 से अधिक विदेशी लोगों के कटे पैर दुरूस्त कर जीवनदान प्रदान कर चुकी है। **सम्बल उसी संस्था का एक महिला प्रकोष्ठ है।** हाथ पैर से लाचार नहीं वरन् जीवन में निराश बहनों में आशा का संचार करने की उत्कृष्ट भावना से महावीर विकलांग की एक इकाई के रूप में महिला प्रकोष्ठ 'सम्बल' का शुभारम्भ हुआ। महिला विकास कार्यक्रम के तहत् मुझे जोधपुर जिले के दूर दराज़ गाँवों में जाने का एवं महिलाओं के साथ महिलाओं के लिए काम करने का सुअवसर मिला था। समाज की कुछ रूढ़िवादी परम्पराओं तथा पुरूषों में शराब एवं अन्य नशे की आदतों से महिलाओं की बिगड़ी स्थितियों को देख कर तरस आता था। यूनिसेफ के सहयोग से सरकार के महिला विकास के इस अभिनव प्रोजेक्ट में भी महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कोई फण्ड नहीं था। डी. आर. मेहता साहिब की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से एक रास्ता निकल ही आया। प्रायोगिक तौर पर दिसंबर 1989 में यहाँ के गणमान्य लोगों की उपस्थिति में डी. पी. साबूजी के यहाँ 27 महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराया गया था। यह धनराशि उपस्थित लोगों के सहयोग से एकत्रित हो गई। हमारा हौंसला बढ़ा और 7 फरवरी 1990 को विधिवत् इस संस्था का गठन किया गया। इस तरह कार्य पहले प्रारंभ हुआ फिर उसके सुखद भविष्य की कल्पना कर संस्था की स्थापना हुई। पहले यह संस्था एक छोटे से किराए के भवन से प्रारंभ हुई, तत्पश्चात संस्था की गतिविधियों से प्रभावित हो स्व. दशरथमल जी साहिब सिंघवी के परिवार ने हाथीराम ओडे में स्थित अपने सुन्दर भवन को एक समारोह में संस्था को सहर्ष दान स्वरूप भेंट कर दिया। आज के इस अर्थप्रधान युग में अपना निजी रहवासीय भवन किसी स्वयंसेवी संस्था को भेंट करना आश्चर्यचकित करने वाला है। उनके परिवार वालों को कोटिशः वन्दन।

हमने संस्थान का नाम 'सम्बल' इसलिए भी रखा कि यह बेसहारों का सहारा बन सके एवं उनके जीविकोपार्जन का सम्बल बन जीवन में खुशहाली ला सके। जोधपुर और बाड़मेर दोनों जिलों का कार्यभार

होने के कारण मुझे गांवों में जाने के बहुत अवसर मिले। वहां चार दीवारी में बंद आर्थिक स्थिति से झूझती हुई तथा शिक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति उपेक्षित महिलाओं को देखती तो कुछ कर गुजरने की टीस उठती। सम्बल ने ऐसा अवसर दिया कि हम अपनी बहिनों के लिये कुछ कर सकें।

बहिनों से कहती हूं :–

काम ऐसे करो कि पहिचान बन जाय,
कदम ऐसे चलो कि निशान बन जाय।
अरे जिन्दगी तो ऐसे ही गुजर जायेगी,
कुछ ऐसा करो कि मिसाल बन जाय।।

साथियों सम्बल संस्थान जिस स्थिति में आज है उसका क्षेत्र केवल रोजगार ही नहीं रह गया है, बल्कि स्वास्थ्य, शिक्षा, पानी, कौशल निर्माण तक विस्तृत हो गया है। अतएव सूर्यकान्ता जी के विधायक कोटे से हवेली में एक हॉल का निर्माण भी करवाया गया। अब यह जोधपुर जिले में ही नहीं वरन् 8 जिलों तक विस्तार पा चुका है। सरकार से भी हमें सम्पूर्ण राजस्थान में काम करने की स्वीकृति पिछले 6 वर्षों से प्राप्त है।

अंत में उन भामाशाहों को धन्यवाद देना चाहूंगी, जिन्होंने हमें मुक्त हस्त से आर्थिक सहयोग प्रदान किया है तथा प्रतिवर्ष इस तरह का सहयोग कर मानवता की सेवा में अपना अपूर्व योगदान दे रहे हैं। मैं उन सभी सदस्य एवं भामाशाहों को विश्वास दिलाती हूं कि आपने जिस विश्वास से सहयोग दिया उसे मेरे सहित सभी कार्यकारिणी के सदस्य तथा कर्मचारी बनाए रखेंगे। मैं सम्बल की कार्यकर्त्ता परियोजना अधिकारी भंवर कंवर की इस अवसर पर सराहना करना चाहूंगी जिसने तन–मन एवं ईमानदारी से इस कार्य को गति देने में अपनी अहम भूमिका निभाई है तथा अन्य कर्मचारियों का सहयोग लेकर पारिवारिक वातावरण में इस कार्य को अंजाम दे रही हैं। आशा है इसी प्रकार इस पुनीत कार्य में सबका सहयोग सदा बना रहेगा। इसी आशा एवं विश्वास के साथ....

इन्सा हो के अगर इन्सा के काम आ गये
इबादत ऐ खुदा इससे बेहतर और क्या होगी।

सुशीला बोहरा

सह-सचिव
की कलम से...

बहुत ही सुखद व शुभ अवसर है कि सम्बल संस्थान ने सेवा कार्य करते हुए 25 वर्ष पूर्ण कर लिये है यह संस्थान का रजत जयन्ती वर्ष है।

काफी लम्बे समय से, मैं इस संस्थान से जुड़ी हुई हूँ इसलिये मैं अपने अनुभव आपके समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ।

परमार्थ की भावना को लेकर इस सम्बल संस्था ने विधवाओं, अनाथों और क्लेश से पीड़ित महिलाओं का चयन कर उन्हें सम्बल प्रदान किया है। स्वास्थ्य एवं बढ़ती हुई रोजी की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया। बेसहारा महिलाओं को सहारा देकर उनको स्वावलम्बी बनाने का काम इस संस्था द्वारा किया जाता है कई महिलाएं लाभान्वित हो चुकी हैं और उन्होंने अनुभव किया है कि स्वावलम्बी मनुष्य कभी परतन्त्र नहीं होता, घर में भी उसका अस्तित्व बढ़ जाता हैं। अधिकांश ग्रामीण बहनें दूसरों पर आश्रित रहती हैं, उन्हें कदम–कदम पर भयानक विपत्तियों का सामना करना पड़ता हैं, असफलताएं और अभाव उनके जीवन को जर्जर बना देती है। उनका जीवन बोझ बनकर रह जाता है, आर्थिक संकट सदैव आते रहते हैं। उन बहनों को आत्म निर्भर बनाने का काम इस संस्था ने किया। इसका फल यह मिला कि उनका जीवन सुखमय होने लगा।

अपने हाथों से किये गये श्रम से, पैसा प्राप्त करने से, आनन्द की अनुभूति होने लगती हैं। यहाँ मैं कहना चाहूंगी कि स्वावलम्बी व्यक्ति अपना ही स्वार्थ नहीं साधता अपितु वह अपने परिवार व समाज का भी कल्याण करता है। क्योंकि आत्मनिर्भरता स्वावलम्बियों की आराध्य देवी होती है, इससे संकोच समाप्त हो जाता है और आत्म विश्वास उत्पन्न होता है तथा उससे आत्म गौरव जागृत होता है। निश्चय ही आत्म निर्भर व्यक्ति कष्टों और बाधाओं को रोंदता हुआ आगे बढ़ता रहता है। यह इस संस्थान की विशेष उपलब्धि है। हजारों ग्रामीण महिलाओं ने सम्बल द्वारा दिये गये उपकरणों का लाभ उठाया है उनमें आत्म विश्वास की वृद्धि हुई है वे दूसरों को परामर्श भी देने लगी है। सफलता और समृद्धि की बातें भी करने लगी है।

यहां नियमित सिलाई केन्द्र व ब्यूटी पार्लर की कक्षाएँ चलती हैं। इस प्रशिक्षण का लाभ हजारों बहिनों ने लिया है, अब तो आजीविका के लिये आय अर्जित करने लगी हैं। उनसे बातचीत करने पर वे बहुत खुश नजर आती हैं।

जब भी सम्बल के स्वरोजगार सम्बन्धी कार्यक्रम होते हैं तब महिलाएं अपने अनुभव सुनाती हैं कि वे क्या थी और क्या बन गई। बेसहरा बहिनों को अपनी जीविका चलाने का सहारा मिल गया, वे सभी सुशीलाजी को हृदय से धन्यवाद देती हैं, उनके अनुभवों से हम भी गद्–गद् हो जाते हैं। कोई सिलाई से, कोई बिजली चलित चक्की से, कोई कपड़े की दुकान खोल कर धन अर्जित करती है कोई मनिहारी की दुकान यह सब सामन दान–दाताओं द्वारा उपलब्ध कराया जाता है।

अंत में कहना चाहूंगी कि सम्बल संस्थान के कार्य अनुकरणीय है। महिला उत्थान का कार्य इस संस्था द्वारा किया जाता है। यह संस्था बहनों को सद्भावपूर्ण निष्काम और परमार्थ मूलक कार्यों को करने के लिये अपनी मंजिल का आभास कराती है।

चन्द्रा मेहता
सह सचिव

सूरज न बन सके तो, दीपक बनकर टिम टिमायेंगें।
जमाने भर के ना सही, कुछ के तो दर्द मिटायेंगे।

माँ की प्रेरणा से "सम्बल"

सन् 1990 में मेरी श्रद्धेया माताजी लाडकंवर बाईसा ने मुझे एक उलाहना दिया। उन्होंने कहा, तुम सेवा की बात करते हो, सेवा का काम क्या करते हो? जयपुर फुट का काम देखते हो, वह अवश्य अच्छा है पर गांव की महिलाओं के बारे में तुम्हारी क्या सोच और योजना है? मेरे पास कोई पर्याप्त उत्तर नहीं था। जब मैं जोधपुर गया, तब इसका समाधान हुआ। वहां मैंने अपनी दुविधा श्रीमती सुशीला बोहराजी को बताई। वे उस समय महिला विकास की परियोजना निदेशक थीं। उनका उत्तर सकारात्मक था। उन्होंने बताया कि उनके विभाग द्वारा जोधपुर जिले की 100 पंचायतों की साधनहीन महिलाओं का पूर्व में सर्वेक्षण किया हुआ है और अगर आर्थिक सहायता उपलब्ध हो तो उनको स्वरोजगार द्वारा आर्थिक रूप से सम्बल बनाया जा सकता है। इस आधार पर सम्बल की स्थापना दिनांक 7 फरवरी 1990 को जोधपुर में हुई।

मैंने कुछ दानदाताओं से बात की। सर्वप्रथम **मोफतराज साहब मोहनोत** ने सहायता दी। मुझे आज भी याद है कि शुरू में विभिन्न पंचायतों से 37 महिलाओं को चुना गया और जोधपुर बुलाया गया और उन्हें स्वरोगार के लिए सहायता दी गई। परम श्रद्धेय आचार्य हस्तीमलजी महाराज के दर्शनार्थ भी उन्हें उसी समय ले गये। उन्होंने बहिनों को आशीर्वाद दिया। जिस असीम श्रद्धा भाव से उन महिलाओं ने आचार्य श्री को नमन किया वह आज भी मेरी स्मृति में अमिट है।

आचार्य श्री का आशीर्वाद सिर्फ महिलाओं को ही नहीं था, अपितु सम्बल को भी था। अन्य दानदाता भी जुड़े। **स्वर्गीय डी.पी. साबू साहब** व उनका परिवार भी सम्बल को सहायता दे रहें हैं ताकि ऐसी तकलीफ वाली महिलाओं को आर्थिक मुख्यधारा से जोड़ा जा सके।

काम बढ़ता गया और यह स्थिति है कि छः हजार से अधिक मुख्यतः ग्रामीण महिलाओं को पुर्नस्थापित करने का प्रयास किया गया। सफलता का प्रतिशत भी बहुत रहा। अधिकतर महिलाओं ने अपना काम सुचारू रूप से चलाया। कई महिलाओं ने पक्के मकान बना लिये। बैंक अकाउंट खोल लिए। बच्चे, बच्चियों को स्कूल भेजना शुरू कर दिया। उनका जीवन ही बदल गया।

वर्षों तक जब भी मैं जोधपुर जाता, तो महिलाओं को मदद देने का एक कार्यक्रम का आयोजन अवश्य होता। शाम से देर रात तक सैंकड़ों महिलाओ से बात करता। उनकी आर्थिक व

सामाजिक स्थिति का पता लगाता, उनकी गरीबी और सामाजिक स्थिति जानकर बहुत दुख होता उनको आश्वस्त करता। कार्यक्रमों में पूर्व में मदद दी गई महिलाएं भी बड़ी संख्या में आती थी। जब उनसे बात होती और उनकी परिवर्तित स्थिति का पता लगता तब बहुत खुशी होती।

एक बार सुशीलाजी को बिना साथ लिए मैं सम्बल की कार्यकत्ताओं के साथ कुछ गांवों में पूर्व में रोजगार दी गई महिलाओं की स्थिति को देखने भी चला गया। मुझे आश्चर्य हुआ कि न केवल उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति बदली पर उनका आत्मविश्वास भी बढ़ गया। एक अनुसूचित जाति की महिला, जो पहले बोल भी नहीं पा रहीं थी, अब दूसरी ऐसी महिलाओं का नेतृत्व कर रही थी। एक अन्य महिला से वहां के स्थानीय पुलिस कर्मचारी भी डरते थे कि अगर किसी महिला के प्रति उन्होंने कोई गलत कार्यवाही की तो वह थाने को भी घेर सकती है तथा सारे जिला प्रशासन को हिला सकती है।

इतनी कम पूंजी से इतना व्यापक काम सिर्फ सम्बल ही कर सकता है।

श्रीमती सुशीला बोहरा व उनके सहयोगियों ने इस संस्था को सफल और विख्यात बनाने के लिए अथक प्रयास किया, उनको मैं नमन करता हूँ और अपनी बात यह कह कर समाप्त करता हूँ कि श्रद्धेय माताजी का महिलाओं के प्रति करूणामय विचार सम्बल के रूप में साकार हुआ और उसका विस्तार हुआ।

डी.आर. मेहता

माना कि जहान को गुलशन न कर सके हम
कांटे तो कुछ कम कर दिए गुजरे जिधर से हम

कैसे पहुंचे गांवों तक

महिलाओं को स्वयं अपने पैरों पर खड़े होने तथा आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से संस्था द्वारा स्वरोजगार उपलब्ध कराया जाता है। इसमें हिन्दु, मुस्लिम, सिख, जैन सभी महिलाओं को मुक्त हस्त से बिना किसी भेदभाव से महिलाओं की योग्यता, क्षमता तथा स्थिति–परिस्थिति को देखकर इच्छानुसार रोजगार उपलब्ध कराया जाता है। अब तक 6000 से अधिक महिलाओं को सम्मान पूर्वक समारोह आयोजित कर दानदाता की उपस्थिति में रोजगार उपलब्ध कराया जा चुका है। इससे आर्थिक सहयोग करने वाले दानदाता को भी संतुष्टि एवं आनन्द की अनुभूति होती हैं। यह कार्यक्रम जोधपुर में ही नहीं बाडमेर, रामदेवरा, भीलवाड़ा तथा दिल्ली में तो तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री चन्द्र शेखर की उपस्थिति में उनके कर कमलों से 81 महिलाओं को सिलाई मशीन, मणिहारी, कपड़े जनरल स्टोर आदि प्रदान कर लाभान्वित किया गया। अब झालावाड़ के अभावग्रस्त गावों में भी यह कार्यक्रम किया जायेगा। संस्था कोटा–झालावाड़, जयपुर, सीकर, जोधपुर, पाली, अजमेर एवं जैसलमेर में भी गाँवों के गरीब तबकों तक पानी पहुंचाने का भी कार्य कर रहे हैं। अतएव उपयुक्त महिलाओं का चयन कर अलग–अलग जिलों में भी यह रोजगार मेला लगाया जा सकता है।

हमारा उद्देश्य है कि जरूरतमंद महिलायें आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी तथा सक्षम बन जाय जिससे वे अपने परिवार का भरण पोषण कर सकें तथा अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, पानी जैसी मूलभूत सुविधायें उपलब्ध करा सकें एवं स्वाभिमान के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सके। प्रारम्भ के वर्षों में आज की अपेक्षा महंगाई बहुत ही कम थी अतएव महिलाओं को छोटे छोटे अनुदान दिये जाते थे 7000 से अधिक अनुदान नहीं दिया जाता था लेकिन अब मंहगाई को देखते हुए 4000 से 25000–30000/– हजार तक उपकरण, साधन, सामग्री, मशीनरी, लेपटॉप तथा कम्प्यूटर आदि महिलाओं की क्षमताओं को देखकर प्रदान किये जाते है।

महिलाओं की चयन प्रक्रिया

चूंकि हमारा कार्य गांवों तक फैला हुआ है। समूह निर्माण, पेयजल आदि अधिकांश कार्य गांवों में ही किये जा रहे हैं। अतएव गांवों में कार्यकलापों का दौरान महिलाओं से विशेष परिचय होता है, दिन प्रतिदिन के कार्यों के दौरान उनकी आर्थिक स्थिति, क्षमता आदि की जानकारी भी मिलती है। इसलिये आसानी से रोजगार मेले का कार्यक्रम संभव हो जाता है। इसके लिए कुछ दिन पहले उन लोगों की इसकी जानकारी दी जाती है। फिर महिलाओं की आकांक्षाओं तथा गांव की स्थिति आदि को देखकर उनको रोजगार चयन करने की प्रेरणा एवं सलाह दी जाती है। तब संस्थान के पदाधिकारी उनसे मिलकर अंतिम सूची तैयार करते हैं। उसमें से उन महिलाओं का चयन किया जाता है जो अधिक जरूरतमंद, विधवा, विकलांग, गरीब, तलाकशुदा आदि हो।

आर्थिक सहयोग कैसे एवं कहाँ से?

महिलाओं को दिया जाने वाला आर्थिक सहयोग किसी दानदाता से प्राप्त सहयोग राशि से उनकी उपस्थिति में किसी उपयुक्त स्थान पर महिलाओं की संख्या तथा दान राशि को ध्यान में रखकर किया जाता है। ये कार्यक्रम मंदिर, स्थानक, सूचना केन्द्र, गीता भवन अथवा कार्यक्रमों के लिये आंवटित भवनों में किये जाते है। हमारा प्रयास रहता है कि किसी पवित्र स्थान पर अथवा संत–मुनिराजों के सानिध्य में यह कार्यक्रम हो, हम लोग अधिकांशता प्रत्येक महिला को माला भी देते है जिससें वे अपने इष्ट देव को भी याद करें। प्रारम्भ के कुछ वर्षों तक महिलाओं को पूर्णतः अनुदान दिया जाता था उसके बाद अब पिछले 20 वर्षों से 25 प्रतिशत छूट (सब्सिडी) तथा 75 प्रतिशत पुनः भरण के आधार पर 30–36 किश्तों में ऋण वापिस लिया जाता है। पुर्नभरण इसलिये किया जाता है कि महिलाओं का स्वाभिमान बना रहे। वे दान नहीं ऋण ले रही हैं, ऐसा बच्चों तथा परिवारजनों के समक्ष उदाहरण रहे। हम महिलाओं को समझाते है कि बड़े बड़े उद्योगपति भी बैंकों से ऋण लेते हैं अतएव तुम्हें भी इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए। दूसरी बात यह है कि महिलायें काम करती हैं क्योंकि ऋण चुकाना है। अन्यथा मुफ्त मिली वस्तु/सामग्री से रोजगार का विस्तार नहीं होगा और पुरूषार्थ की भावना कुंठित भी होगी। पुर्नःभरण की राशि का उपयोग संस्था शिक्षा स्वास्थ्य आदि के लिए करती है।

तत्पश्चात महिलाओं को अनुदान देने से पूर्व उन्हें सूचित किया जाता है फार्म भी भरे जाते है। आदरणीय डी.आर. मेहता साहब भी अधिकांशतः एक दिन पूर्व पधारते और प्रत्येक महिला से उनका दुख दर्द जानते एवं उसकी पूर्ति हेतु वहां उपलब्ध दानदाताओं से अनुरोध करते तथा बीमारी हेतु विशेष योगदान आदि भी।

हमारे अधिकांश कार्यक्रम चाहे बाडमेर हो या रामदेवरा, भीलवाड़ा, दिल्ली या जोधपुर में हो। पद्मभूषण डी.आर. मेहता साहिब की उपस्थिति में ही करवाने का प्रयास रहता है। वे जब महिलाओं से बात करते हैं तो लगता कि कोई भाई अपनी बहिन के दुख–दर्द बांट रहा है। एक सीनियर अधिकारी या रिजर्व बैंक का डिप्टी गर्वनर या सेबी के चेयरमेन जैसा उच्च अधिकारी किस तरह जमीन से जुड़कर काम कर रही बहिनों के दुख दर्द कैसे मिटा रहा है? हमें उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए ऐसे गरीबों एवं विकलांगों के मसीहा को शत शत वन्दन, अभिनन्दन।

है समय की धार जिसमें सब कुछ बहा जाता है।
लेकिन कुछ लोग ऐसे होते है जो इतिहास बनाया करते है।

संस्थान की गतिविधियाँ – एक नजर में

सम्बल का शुभारम्भ महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराने हेतु हुआ था लेकिन इसका कार्य क्षेत्र विस्तृत होता गया और आज वह कई प्रकार के कार्यों को अंजाम देने में मशगूल है। हमारे ग्रामीण रूढ़ीवादी समाज में आज भी कई ऐसी परम्परायें हैं जो परिस्थियों के कारण उत्पन्न हुई थीं लेकिन आज उनकी आवश्यकता नहीं रही है। इसी तरह लिंग परीक्षण गर्भ में स्थित बच्चे की बीमारी के जाँच के लिये प्रारम्भ हुआ था लेकिन उनका दुरूपयोग शहरी व ग्रामीण, अनपढ़ एवं शिक्षित सभी कर रहे हैं। 100 लड़कों के पीछे 83 लडकियां ही रह गई जिसका प्रभाव हमारी सामाजिक व्यवस्था पर पड़ रहा है। इसके लिए लोगों को जागृत करने तथा उनके पारिवारिक जीवन को सुखद बनाने के लिए संस्था कई प्रकार के कार्य कर रही है :–

विभिन्न कौशलों का प्रशिक्षण :

महिलायें सिलाई करके अपना जीविकोपार्जन कर सकती है, यह जानकर हमने सिलाई प्रशिक्षण सेन्टर खोलने प्रारम्भ किये। ये केन्द्र शहर तथा आसपास के गाँवों में भी खोलकर तीन महीने का प्रशिक्षण प्रारम्भ किया। फिर छः माह का कोर्स प्रारम्भ कर दिया। इन महिलाओं में से जरूरतमंद महिलाओं को सिलाई मशीन, कशीदा एवं पीकू मशीन संस्था द्वारा उपलब्ध करवाई। इसी तरह खिलौने बनाने का प्रशिक्षण, आरी–तारी का प्रशिक्षण भी प्रारम्भ किया। जब संस्था को हाथीराम के ओडे के भवन का स्वामित्व मिल गया तब वहाँ स्थायी रूप से सिलाई, बैग बनाने, आरी–तारी तथा ब्यूटी पार्लर का प्रशिक्षण प्रारम्भ कर दिया गया।

लघु व्यवसायिक प्रशिक्षण :

गांव की महिलाओं की उत्सुकता को देखते हुए गाँवों में अचार, जैम, जैली, ज्यूस बनाने और साबुन, चिप्स, खिचियां, पापड, सोडा बनाने का प्रशिक्षण दिया जाने लगा। उम्मेद नगर सूरसागर आदि गांवों की महिलाओं ने इसमें बहुत रूचि दिखाई। इससे घर बैठे उपयोगी चीजों को बनाने से कमाई होने लगी।

महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन :

स्वयं सहायता समूह योजना को क्रियान्वित करने के लिये राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित दिल्ली की बैठक में सचिव महोदय को सम्मिलित होने का अवसर मिला। उन अनुभवों को संस्था में लागू कर नाबार्ड के सहयोग से 200 स्वयं सहायता समूह बनाने का कार्यक्रम लिया 2010 तक 200 समूहों का गठन किया गया जिसमें से 160 स्वयं सहायता समूहों को बैंक से ऋण दिलाकर आत्म निर्भर बनाया गया। इसके साथ 2011–12 में 150 महिलाओं को रेडीमेड कपडों, थबुकडा में 30 महिलाओं को सिलाई में, गेलावास में 30 महिलाओं को आरी–तारी तथा सूरसागर में बन्धेज व सिलाई हेतु 30–30 महिलाओं को प्रशिक्षण देकर रोजगार से जोड़ा गया।

घरेलू उद्योग योजना :

संस्था द्वारा जिला उधोग केन्द्र द्वारा आवंटित प्रशिक्षण केन्द्रों का संचालन 13 वर्षों से किया जा रहा है। 7 वर्ष तक तो ये कार्यक्रम पूरे वर्ष चलते थे, लेकिन पिछले 6 सालों से कभी दो और अब प्रति संस्था एक कार्यक्रम आंवटित किया जाता है। इस वर्ष 2015–16 में इसी कार्यक्रम के तहत जोधपुर केन्द्रीय जेल की महिलाओं को सिलाई प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसके पश्चात महिलाओं को प्रमाण–पत्र भी वितरित किये जायेंगे।

ग्राम उद्यमिता विकास कार्यक्रम :

नाबार्ड के सहयोग से सस्था द्वारा ब्यूटी पार्लर का 6 सप्ताह का विशेष प्रशिक्षण दिया गया जिसमें दुल्हन मेकअप, मेहन्दी लगाना, बालों की कटिंग तथा विभिन्न प्रकार के फेशियल के बारे में सिखाया गया। बाजार की स्पर्धा में महिलाओं को अधिक आमदनी हो सके इसलिये यह विशेष प्रशिक्षण दिया गया। इस तरह समय–समय पर अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाये जाते रहे हैं।

स्वर्ण जयन्ती स्वरोजगार (SGSY) :

संस्था की इस योजना के तहत औसियां पंचायत समिति के बी.पी.एल. परिवार के 12 समूहों का गठन किया गया, प्रत्येक समूह में 10–12 महिलाओं को जोडा गया। औसियां पंचायत समिति के उम्मेद नगर तथा मथानिया में इन समूहों द्वारा मिर्च मसाले तथा फैंसी समान का उत्पादन कर बेचा जा रहा है। सरकार से इन्हे 12 लाख का ऋण दिया गया जिसमें से 6 लाख इनको छूट मिल गई। महिला समूहों द्वारा तैयार माल पश्चिमी हस्तशिल्प उद्योग मेले में भी स्टॉल लगाकर, तथा दिल्ली, जयपुर मेले आदि में भी भाग लेकर अच्छी कमाई कर लेते हैं।

महिला मंडलों का सशक्तिकरण :

महिला मंडलों के सशक्तिकरण हेतु आई.ई.सी. कार्यक्रम के तहत गांवों की बैठकों का आयोजन किया जाता है जिसमें जननी सुरक्षा योजना, पालनहार योजना, विधवा पुत्री विवाह योजना, गांवों में वर्षा जल संग्रहण, संरक्षण, एंव महिला घरेलू हिंसा व लिंग भेद आदि पर विशेष जानकारी देकर महिला मंडलों को सशक्त बनाया जाता है जिससें बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जा सके।

अनुदान का विवरण 1990–2015

क्र.सं.	रोजगार	कुल
1	आटा चक्की	405
2	सिलाई मशीन पैर की	2378
3	सिलाई मशीन हाथ की	280
4	कशीदा मशीन	182
5	रेग्जीन मशीन	38
6	दाल पीसने की मशीन	32
7	अम्ब्रेला मशीन	40
8	चमड़े का कार्य	55
9	स्टील बर्तनों की दुकान	154
10	किराणे की दुकान	1025
11	गाय–दूध व्यवसाय हेतु	384
12	पापड बड़ी	109
13	सब्जी एवं फल की दुकान	228
14	कपड़े की छोटी बुटिक	252
15	मनिहारी की दुकान	158
16	गोली–बिस्किट की दुकान	58
17	फैन्सी स्टोर	49
18	मिट्टी के बर्तन	8
19	हाथ थैला	9
20	साईकिल / हारमोनियम	5
21	कसीदा कार्य	22
22	गोटा किनारी	6
23	बचत समूह	96
24	लेपटॉप / कम्प्यूटर	4
25	ब्यूटी पार्लर	42
26	विविध कार्य	120
	कुल	**6130**

विकलांग सहायता समिति
महिला प्रकोष्ठ 'सम्बल' जोधपुर

जमनालाल बजाज
एवं
भगवान

भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति

भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति
(महिला प्रकोष्ठ–सम्बल) द्वारा आयोजित
स्वरोजगार के माध्यम से महिलाओं का लाभान्वित कार्यक्रम
स्व. श्री डी.पी. साबू की
द्वितीय पुण्य तिथि के अवसर पर

भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति
(महिला-प्रकोष्ठ) सम्बल जोधपुर
एवम्
जिला महिला विकास अभिकरण
के संयुक्त तत्वाधान में

में आपका हार्दिक स्वागत

प्रचार-प्रसार (आई.ई.सी) कार्यक्रम रिपोर्ट

गांवों में शुद्ध पेयजल वितरण कार्यक्रम

जल है तो जीवन है। इस कार्यक्रम के तहत् जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिक विभाग के सहयोग से 4 सितम्बर 2010 तक बालेसर ब्लॉक के 77 गांव तथा लूणी ब्लॉक के 103 गांव कुल 180 गांवों में वृहत् परियोजना के तहत् आई.ई.सी. कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पानी के अपव्यय को रोकना, महिलाओं की सहभागिता का बढावा देना, गांव में जल प्रबन्धन उचित करना तथा व्यवस्था को मजबूत बनाना, जल शुल्क लागू करना और जन सहभागिता के सहयोग से स्वास्थ्य शिक्षा, स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करना है।

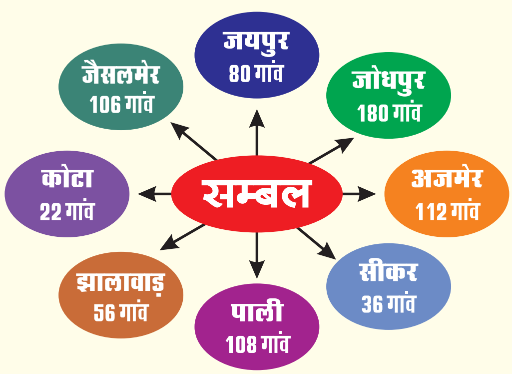

इस कार्यक्रम के तहत् ग्रामों में जल एवं स्वास्थ्य समितियों का गठन करना, ग्राम एवं जल स्वास्थ्य अभियान्त्रिक विभाग के बीच एग्रीमेन्ट कराना, गांवों की जनसंख्या का सर्वे करना, गांवों का नजरी नक्शा बनाना व गांवों में पानी की देखरेख के लिए केयरटेकर का चयन करना एवं उसको प्रशिक्षण देना ताकि पानी संबंधी समस्याओं को ग्राम स्तर पर सुधारा जा सके।

हमारे कार्य को देखते हुए राजस्थान सरकार ने संस्था को इस कार्यक्रम के लिये सम्पूर्ण राजस्थान में कार्य करने की स्वीकृति प्रदान कर दी।

संस्था ने 2010 में 2015 तक **जोधपुर के 180 गांव अजमेर के 112 गांव, सीकर के 36 गांव, जयपुर के 80 गांव, झालावाड के 44, कोटा के 20 गांव और जैसलमेर के 106 गांवो में आई.ई.सी. कार्यक्रम को फैला दिया। इस प्रकार 8 जिलों में कुल 704 गांवों में हम काम कर रहे हैं** तथा कुछ गांवों के काम पूरे भी कर लिये हैं। इस कार्यक्रम के तहत् संस्था गांवो में स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रम भी कर रही है। गांवों में रात को चौपालों में जाकर नुक्कड नाटकों के माध्यम से उनको स्वास्थ्य के बारे में समझाया भी जा रहा है।

इसलिये गांव के लोग हमारे बुलाने पर दौड़े आते हैं उनको लगता है कि संस्था के सभी कर्मचारी निःस्वार्थ सेवा भावना से कार्य कर रहे हैं। ये कागजी कार्यवाही या दिखाने के लिये नहीं हमारा सहयोग करने आ रहे हैं।

एक अभिनव प्रयोग

केन्द्रीय महिला कारागृह में सिलाई प्रशिक्षण

संस्था न केवल अपने कार्यालय में ही प्रशिक्षण कार्यों का संचालन कर रही है वरन् आवश्यकता अनुसार गरीबों की बस्तियों में भी प्रशिक्षण चलाती हैं। जिला उद्योग केन्द्र के सहयोग से भी प्रतिवर्ष 1 या 2 प्रशिक्षण चलाये जा रहे हैं। इस वर्ष यानि 2015–2016 में संस्था को केन्द्रीय महिला जेल में भी महिलाओं को सिलाई प्रशिक्षण का सुअवसर मिला।

केन्द्रीय महिला जेल की अधिकारी ने हमारी सचिव सुशीलाजी को जेल में ऐसे प्रशिक्षण के लिये निवेदन किया। विपश्चना साधना कराने के लिये वे 2015 में सप्ताह में एक बार जाती थी अतएव उनका परिचय उप जेल अधीक्षक श्रीमती सम्प्रति से हुआ। वे महिलाओं को कुछ हुनर सीखाना चाहती थी। वहां की व्यवस्था तथा सिलाई मशीनों की उपलब्धता को देखते हुए वहां पहला त्रिमासिक कोर्स संस्था ने अपनी ओर से चलाया उसके बाद जिला उद्योग केन्द्र के सहयोग से दूसरा प्रशिक्षण चल रहा है। कैदी महिलायें बहुत रूचि से सिलाई सीख रही हैं जिससे जेल से मुक्त होने के बाद वे आत्म निर्भर बन सके।

जेल की महिलाओं के उद्गार

प्रमिला

मैं जेल में आई तब से मानो मेरी जिन्दगी ठहर सी गई थी ऊट–पटांग सोच–सोच कर दिमाग खराब होता रहता था। खाली दिमाग शैतान का घर, कुछ भी न कर सकने का सोचकर अपना समय ऐसे ही बीता रही थी।

इस संस्था ने जेल की महिलाओं के लिए सिलाई सेन्टर खोलकर हमारा जीवन संवार दिया। हमारे समय को बहुत उपयोगी बना दिया। आज हम सिलाई सीखकर स्वयं का कार्य भी कर सकते हैं।

जब भी मैं जेल से बाहर आऊंगी। मैं इस संस्थान का कार्य जगह–जगह बताऊंगी और कहूँगी ये सम्बल संस्था समाज से ठुकराई हुए इन्सानों को अपना बनाती हैं, उनके जीवन में खुशहाली लाती है। इस संस्था का मैं बहुत–बहुत धन्यवाद करती हूँ। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि जेल की कोठरी में भी मुझे नई ऊर्जा मिलेगी।

शकुन्तला

मैं हमेशा जेल में बस यही सोचती थी कि मेरा जीवन अब किस काम का, बस जीने की कोई चाहत ही नहीं थी। लेकिन सम्बल संस्था ने तो मेरी किस्मत ही बदल दी।

जेल में सिलाई सेन्टर खोला और हमें पढ़ाई भी करवाई। हम महिलाओं को इस संस्था के माध्यम से बहुत कुछ सीखने का मौका मिला।

मैं तो इस संस्था के बारे में यही कहना चाहूंगी कि आपने तो हमें अपने गले लगाकर काम एवं पढ़ाई सिखाकर हमारा जीवन सुधार दिया मेरी सोच ही बदल दी है। मैं सम्बल संस्था की पूरी टीम को धन्यवाद देती हूं।

मन्जूबाई किन्नर

मन्जूबाई जेल के जीवन से बहुत निराश व हताश रहने लगी और मन से बहुत परेशान भी। मुझे सम्बल संस्था द्वारा सिलाई सीखने का अवसर मिला और पढने लिखने का अवसर भी दिया गया मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने भी सभी कुछ बहुत मन लगाकर सीखा और अब मेरा जेल में बहुत अच्छा समय निकल रहा है। क्योंकि काम में व्यस्त रहने लगी। ये संस्था जेल की महिलाओं के लिए बहुत–बहुत अच्छा कार्य कर रही है। हमारे जीवन को सुधार रही है, मैं इस संस्था की बहुत आभारी हूँ। इस अन्धकारपूर्ण जीवन में आशा की नई किरण का संचार हुआ है।

कमला

मेरा जेल में समय काटे न कट रहा था और ये ही सोचती थी कि अब जीवन में कुछ भी नहीं है। लेकिन सम्बल संस्था ने जेल में सिलाई सेन्टर खोलकर हम सबका जीवन सुधार दिया। जिन महिलाओं ने सिलाई सीखी वे जेल में ही काम करके महीने के 1500 रू तक कमा लेती हैं।

मैं जब गांव जाऊंगी तब वहां जाकर सिलाई करूंगी अपना जीवन अच्छे से कार्य कर जीऊंगी और सभी को बताउंगी कि सम्बल संस्था ने जेल की महिलाओं के जीवन सुधारने के बारे में सोचकर और बहुत बड़ा कार्य किया। हम सबको सिलाई का प्रशिक्षण देकर। हमारे दुख दर्द की टीस को कम कर दिया। जीवन में एक नया विश्वास जगने लगा है। मैं इस संस्था को कभी भूल नहीं पाऊंगी।

मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों पर नित्य रहे,
दीन दुखी जीवों पर मेरे उर से करूणा स्त्रोत बहे,
दुर्जन क्रूर कुमार्गरता पर क्षोम नहीं मुझको आवे,
साम्य भाव रखूं मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे।

सच को सच मानो तो

नारी जब नन्हीं बिटिया होती है
तितली, गुड़िया या चिड़िया होती है,

जब वह प्रेयसी होती है
होती है बासंती बयार
या उफनती पहाड़ी जलधार

जब वह वधू या पत्नी होती है
घर–आंगन के कोने–कोने में
दीपशिखा बन चमकती है
बगिया बन महकती है
होती है तब वह पूरा घर–द्वार,
जब वह मां होती है
धरती बन जाती है
जीवित रहती है,
जिससे मनुष्य की परम्परा।
जब वह पत्थर के घर से बाहर निकल
कर्मक्षेत्र में उतरती है
होती है गंगोत्री की धार
देश व समाज की पहचान का आधार

जब वह अपमानित होती है
होती है दुर्गा के खड्ग की धार
समुन्द्र में उमड़ता प्रलयंकर ज्वार
उसका इंद्रधनुषी वासंती आंचल
आततायी के लिए कफन बन जाता है

नारी कभी बेचारी नहीं होती
वह तो जन्म से ही होती है 'आधा संसार'
कल्पना नहीं है यह, सच है
सच को सच मानो तो
नारी को पहचानो तो।

– डॉ. सावित्री डागा

''आधे संसार की आत्मकथा'' (पुस्तक) के सौजन्य से

संस्थान के कर्मचारी

भंवर कंवर
परियोजना अधिकारी

सरोज कंवर
परियोजना समन्वयक

सोहन सारण
परियोजना समन्वयक

सुमेर सिंह
परियोजना समन्वयक

पप्पू पटेल
परियोजना समन्वयक

कान्ता तोमर
प्रशिक्षक

शमा परवीन
प्रशिक्षक

ज्योति सोलंकी
प्रशिक्षक

पुष्पा भूतड़ा
प्रशिक्षक

सी.आर. भंसाली
खजांची

कार्मिकों के मन की बात.....

श्रीमती भंवर कंवर

मेरी जिन्दगी मेरे नाम के अनुरूप थी। अपनी जिन्दगी की परिस्थितियों के भंवरजाल में फंसी हुई थी। सर्वप्रथम मैं पारसमल सुशीला बोहरा ट्रस्ट द्वारा लोकजुम्बिश प्रोग्राम से जुड़ी। मुझे आशा की एक नई किरण दिखने लगी। उस समय तक मुझे कार्य करने का कोई अनुभव नहीं था और न ही कोई डिग्री थी। केवल दसवीं पास थी और वह भी प्राइवेट पढ़ाई की थी। लेकिन सुशीला जी के मार्गदर्शन में निष्ठा से काम करने लगी। ट्रस्ट द्वारा लोक जुम्बिश का प्रोजेक्ट पूर्ण होने के बाद उन्होंने मुझे सम्बल कार्यकर्त्ता के पद पर नियुक्ति दे दी। मैंने ऑफिस का कार्य करते हुए पहले इन्टर किया फिर बी.ए. किया। मेरा हौंसला बढ़ने लगा। मैंने कार्य के साथ एम.ए. भी कर लिया। मेरा आत्मविश्वास बढ़ने लगा। मुझे जितना काम दिया जाता उसे मैं बहुत ही निष्ठा व परिश्रम से करने लगी। धीरे–धीरे मेरी पहचान गांवों में बढ़ने लगी, मेरी काम के प्रति लगन को देखकर मुझे परियोजना अधिकारी के पद पर लगा दिया।

आपने अपना बनाया मेहरबानी आपकी,
मैं तो इस काबिल न थी, कद्रदानी आपकी।

संस्था जरूरतमन्द महिलाओं को रोजगार देने के अलावा स्वयं सहायता समूह निर्माण का कार्य भी करती है। **नाबार्ड** के सहयोग से विभिन्न गांवों में 200 समूहों के निर्माण का प्रोजेक्ट चल रहा था। हमने बहुत अच्छे समूह बनाए। उनके द्वारा ग्राम थबूकड़ा आदि गांवों में निरीक्षण के दौरान उनकी सफलता को देखकर नाबार्ड के अधिकारियों ने गांव के प्रत्येक समूह को 500–500 रूपये इनाम दिये। राशि भले ही कम हो लेकिन पुरस्कार शब्द में ही ताकत है। हमने 200 में से 160 समूहों को बैंक से जोड़ा। आज उनमें से कई समूह लाखों की कमाई तक पहुंच गये हैं।

इसी समय **जल व स्वास्थ्य अभियान्त्रिक विभाग** से लूणी और मण्डोर के 183 गांवों के लोगों को पानी के विषय में जानकारी देने, नल कहां लगाये जायें, कितना पानी गांव को चाहिये, उसके लिए पूरे गांव का आबादी तथा पशुओं की संख्या की गिनती करना, नजरी नक्शा बनाना, महिलाओं की कमेटियां, ग्राम स्तर की कमेटियां बनाने तथा प्रशिक्षण देने का दुष्कर कार्य था। लेकिन हमने इतना अच्छा काम किया कि अन्य संस्थाओं ने हमें अन्य जिलों में काम करने का मौका दिया। आज मैं 8 जिलों के 704 गांवों में यह काम कर रही हूँ। अधिकांश गांव के कार्य सम्पन्न भी हो चुके हैं।

संस्था द्वारा संचालित प्रशिक्षण केन्द्रों तथा जिला उद्योग केन्द्र द्वारा आंवटित प्रशिक्षण कार्यक्रमों, **प्रयास संस्था** द्वारा आंवटित स्वास्थ्य कार्यक्रम, एन.आर.एच.एम. आदि सभी कार्यों को करते हुए मैं संस्था के सपनों को साकार करने में लगी हूँ। मुझे यहां काम करने में बहुत ही आनन्द आता है। अपने परिवार से भी बहुत जुड़ी हुई हूँ। उनके दुःख–सुख की हमेशा भागीदार रहती हूँ। ऑफिस में हम सभी कर्मचारी परिवार की तरह कार्य करते हैं। संस्था के सभी सदस्यों से भी मुझे बहुत सीखने को मिला है।

संस्था सचिव सुशीला जी बोहरा के लिए कहना चाहूंगी –

माँ तो जन्म देती है, मुझे उन्होंने जीवन दिया है,
आपने मेरी तरह हजारों महिलाओं को संवार दिया है,
और अपने लिये तो सभी जीते हैं, दूसरों के लिये जी करके तो देखो
जीवन में नई ऊर्जा एवं आनन्द की वर्षा होने लगेगी।

सरोज कंवर

मैं इस संस्था से सन् 2006 से जुड़ी थी। उस समय मेरी परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। मैं स्वयं प्रशिक्षण लेकर आर्थिक दृष्टि से सक्षम होना चाहती थी। 2006 में संस्था में ब्यूटी पार्लर का काम सीखने के लिये आई थी। ब्यूटी पार्लर का कोर्स सीखकर मैं संस्था में ब्यूटीशियन के पद पर कार्य करने लग गई। इस कार्य के साथ में नाबार्ड द्वारा एस.एच.जी. परियोजना के अन्तर्गत 100 **एस.एच.जी.** (स्वयं सहायता समूहों) के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं उन समूहों को बैंक ऋण से जोड़ा। अब 2014 से आई.ई.सी. कार्यक्रम के अन्तर्गत परियोजना समन्वयक के पद पर कार्य कर रही हूं। इस संस्थान से जुड़ने से मेरी जिन्दगी ही बदल गई है, मेरे भविष्य का निर्माण कर दिया है। मेरे पति कुछ नहीं कमाते, उनके आलस्य की आदत से हमारा घर बर्बाद हो गया है। उससे उभारने के लिये मैं संस्था की बहुत ऋणी रहूंगी। संस्था ने मेरे एक मात्र बेटे को अच्छा पढ़ा लिखाकर समर्थ होने का अवसर दिया है। इसी का परिणाम है कि मेरे बेटे का चयन राष्ट्रीय स्तर पर Under Fourteen (14 वर्ष से कम) क्रिकेट टीम में चयन हुआ। मैं संस्था के उपकार को कभी नहीं भूल सकती।

शमा परवीन

मैं 2005 में यहां ब्यूटी पार्लर का कोर्स सीखने के लिए आई थी। मैं इस कार्य में बहुत निपुण हो गई अतः 2007 में सरोज कंवर मैडम मेरे घर आए और उन्होंने मुझसे सम्बल में ब्यूटी पार्लर सीखाने के लिए प्रोत्साहित किया। मेरे घर वालों ने बहुत मना किया लेकिन मेरे पति इस्लामुददीन ने मेरा साथ दिया। मैं सम्बल में ब्यूटी पार्लर का कोर्स सीखाने लगी उस कोर्स को सीखाने के मुझे प्रति माह 1000/– रूपये मिलते थे। मैंने यहां उसके बाद सिलाई का कोर्स भी पूरा किया। मैं दूसरी जगह सम्बल के जरिये ही सिलाई सीखाने जाने लगी। जिसके भी मुझे प्रति माह 1000/– रूपये मिलते थे। अब मानदेय काफी अधिक है। इसके अलावा मैं प्रदर्शनी में जूतियों की दुकान भी लगाती थी उसमें मेरे पति मेरे साथ बैठते थे, उसमें हम 10 दिन के 10,000 रू. कमा लेते हैं। अतः मैं दो–दो जगह प्रशिक्षण देती हूँ और सेन्ट्रल जेल में सिलाई सीखाती हूं। अब मैं प्रति माह 9000/– रू. कमा लेती हूं सम्बल से मुझे बहुत सहयोग मिला और मैंने बहुत सारी महिलाओं को सम्बल के माध्यम से सिलाई मशीनें और लोन भी दिलाया जिससे गरीब महिलाओं को बहुत मदद मिली। सुशीला दीदी के बारे में मैं यहीं कहना चाहती हूं कि जैसे उन्होंने मेरे जीवन को नई रोशनी दी वैसे ही अन्य गरीब महिलाओं की भी मदद कर रहे हैं तथा आगे भी करते रहें। मुझे यहां बहुत ही अच्छा लगता है।

कान्ता तोमर

मैंने ''सम्बल'' में 2007 में श्रीमान् बंशीलाल जी से सिलाई सीखी। मेरे घर की आर्थिक अवस्था ठीक नहीं थी, इसलिए मैं सम्बल में सिलाई सीखाकर खुद अपना रोजगार करना चाहती थी। प्रशिक्षण समाप्ति के बाद सिलाई शिक्षक बंशीलालजी के स्वर्गवास के बाद मुझे प्रशिक्षक के रूप में कार्य करने का मौका मिला। मैं 12 से 3 बजे तक सिलाई सीखाती हूं। मुझे 3000/– प्रति माह मानदेय मिलता हैं। मैं सरोज कंवर मैडम का धन्यवाद करती हूं कि मुझे उन्होंने सीखने का अवसर प्रदान किया तथा सचिव महोदया को धन्यवाद दूंगी कि मुझे उन्हें आत्मनिर्भर बनने का अवसर प्रदान किया। मुझे सम्बल में अपनी ही तरह दूसरी महिलाओं को सिलाई सीखाना बहुत अच्छा लगता हैं। मैं सम्बल से हमेशा जुड़ी रहूंगी और बहुत सारी महिलाओं को सिलाई सीखाकर उनका भविष्य बना सकूँ यही मेरी भावना है।

सोहन सारण

मैं इस संस्था से सन् 2009 में जुड़ा था। उस समय मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। मैं सन् 2009 में 12 वीं में अध्ययन कर रहा था। मेरे पास स्कूल की फीस भरने के लिए भी पैसे नहीं थे। मैं कचहरी परिसर में टाईपिंग का कार्य करके स्कूल जाता था इस कारण मेरी पढ़ाई भी सही ढंग से नहीं हो रही थी। उस समय मेरी माताजी श्रीमती सजनाई देवी इस संस्थान से जुडी हुई थी। एक बार परियोजना अधिकारी श्रीमती भंवर कंवर मेरे घर पर आये। उन्होंने मुझ से पूछा कि कहां पढ़ाई कर रहे हो? मैंने उन्हें अपनी समस्या बताई तब उन्होंने संस्था सचिव श्रीमती सुशीलाजी को मेरी आपबीती बताई। उन्हें धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने मुझे संस्था में ही रहने के लिए मकान एवं पढाई का खर्चा इत्यादि देने की स्वीकृति प्रदान की। मैं पढाई के साथ–साथ संस्था में कम्प्युटर पर अंशकालीन कार्य भी करने लगा। मैंने संस्था के सहयोग से 12 वीं से ग्रेजुएट तक की पढाई पूरी कर ली। पढाई के बाद संस्था ने मेरे को पूर्णकालीन काम करने का अवसर दिया। आज में संस्था में परियोजना समन्वयक पद पर कार्य कर रहा हूं। मुझे अच्छा वेतन मिल रहा है।

दुनिया में कोई इतना अमीर नहीं होता
कि वह अपना बीता हुआ कल खरीद सके
और कोई इतना गरीब नहीं होता
कि वह अपना आने वाला कल संवार न सके।

सहयोगी कार्यकर्ता

पुष्पा भूतड़ा पुत्री स्व. पन्नालाल जी भूतड़ा

नन्दवान लूणी

मैं इस संस्था से 25 वर्षों से जुडी हुई हूँ। यह एक ऐसी संस्था है, जो लोग पेड़ को उखाडकर फेंक देते हैं, सम्बल संस्था फेके हुए पेड़ को पुनः लगाकर हरा–भरा कर देती है। गरीब, विधवा, विकलांग, परित्यागता महिलाओं को अपना स्वरोजगार लगवाकर आत्म निर्भर बनाती है। जिससे अपने परिवार का पालन पोषण भली–भांति कर सके। समाज में मान सम्मान की जिन्दगी जी सके।

इस कार्यक्रम के तहत मैंने आज तक 150 महिलाओं को जोड़ा दिया है। मुझे इस संस्थान से जुड़ कर कार्य करने में बहुत अच्छा लग रहा है। समाज की महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनाने मे इस संस्था ने बहुत श्रेष्ठ कार्य किया है। मैं इस संस्था में हमेशा जुड़ी रहना चाहती हूँ।

सहयोगी कार्यकर्ता

ज्योति सोलंकी W/o स्वं. नरेन्द्रसिंह

पेट्रोल पम्प के पास सूरसागर पूर्व पार्षद

मैं सम्बल संस्था से 15 साल से जुड़ी हुई हूँ। मैंने इस संस्था से जुड़कर गरीब बेसहारा एवं विधवा महिलाओं को सिलाई का प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वरोजगार हेतु प्रेरित किया है।

मैंने आजतक लगभग 100 महिलाओं को सिलाई एवं बन्धेज का प्रशिक्षण दिया है। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य यही है, महिलाओं को स्वरोजगार के काबिल बनाकर आत्म निर्भर बनाना है एवं बेसहारा महिलाओं को सहारा देना, आर्थिक सम्बल देना, जिससे वे खुशहाली से जी सके। मैंने आजतक अपनी पंचायत की करीब 100 महिलाओं को स्वरोजगार दिलाने में सहयोग किया तथा उनके कार्य की निगरानी भी रखती हूँ तथा उचित परामर्श भी देती हूँ।

मुझे भी इस संस्था में कार्य करना बहुत अच्छा लगता है।

क्या कहते हैं प्रशिक्षणार्थी

मेरी सिलाई सीखने की इच्छा बहुत अरसे से थी, लेकिन हमारी आर्थिक स्थिति इतनी सुदृढ़ नहीं है कि मेरे पिता भारी फीस देकर मुझे सिलाई प्रशिक्षण दिला सके। इस संस्था की जानकारी हुई तो मुझे यहां बहुत ही कम फीस में सीखने का अवसर मिल गया। यहां बहुत अच्छा सीखाते है। व्यवहारिक प्रशिक्षण के अलावा कॉपी में डायग्राम तथा सिद्धान्तिक प्रशिक्षण भी देते हैं, जिससे भविष्य में चित्रित डायग्राम के सहयोग से हम सभी नाप के छोटे मोटे कपड़ों की सिलाई कर सके। यहाँ कान्ता तोमर मैडम बहुत अच्छा सिखाती हैं। संस्थान की सचिव महोदया भी बराबर आती रहती हैं। संस्थान को धन्यवाद देती हूं कि उन्होंने मेरा सपना साकार करने का अवसर प्रदान किया है।

चाँदनी चौहान

नसीम बानो

मेरे घर की आर्थिक स्थिति बहुत खराब रही हैं। इसलिये मैं भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति महिला प्रकोष्ठ ''सम्बल'' जोधपुर में सिलाई सीख रही हूं। यहां पर बहुत ही सरल एवं निपुणता से सिलाई की बारीकी सिखाई जाती है। जिससे सिलाई सीखने में आसानी होती है। मुझे यहां पर सिलाई सीखकर बहुत अच्छा लग रहा है। मैं सिलाई का कोर्स सीखकर पिताजी की आर्थिक रूप से मदद करना चाहती हूँ। ''सम्बल'' गरीब महिलाओं को काम दिलाने के लिए बहुत अच्छा स्त्रोत हैं यहां महिलाएं स्वरोजगार प्राप्त कर रही हैं और अपना व अपने परिवार का भविष्य संवारती है। मैं एक महिला होने के नाते ''सम्बल'' से हमेशा जुडी रहूंगी और अपनी ही तरह दूसरी महिलाओं को भी सक्षम बना सकूं यही मेरी कामना है।

मैं एक गरीब परिवार से हूँ। किसी अन्य संस्थान से पार्लर सीखने हेतु भारी भरकम फीस जमा करवाने में असमर्थ हूं इसलिए मैं ''सम्बल'' से ब्यूटी पार्लर का कोर्स कर रही हूँ। यहां पर बहुत ही सरल और अच्छे तरीके से शमा मेडम पार्लर कोर्स की जानकारी लिखित और मौखिक तरीके से देती हैं। जिससे यह कोर्स सीखने में बहुत आसानी हो रही है मुझे यहां प्रशिक्षण लेना बहुत अच्छा लग रहा है। मैं ब्यूटी पार्लर का कोर्स सीखकर स्वयं का पार्लर खोलना चाहूंगी। ''सम्बल'' गरीब महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने का बहुत अच्छा स्त्रोत है जिससे महिलाएं रोजगार प्राप्त कर सकती है और साथ ही मैं खुद का भविष्य भी संवार सकती हूं। मैं अपनी ही तरह दूसरी महिलाओं को भी इस संस्था की जानकारी दूंगी।

मनीषा तंवर

मैं शारीरिक रूप से विकलांग हूं। लेकिन मैं आत्म निर्भर बनना चाहती हूँ।

''सम्बल'' संस्थान में ब्यूटी पार्लर का कोर्स इसीलिए कर रही हूं। विकलांग होने के कारण संस्था मुझे बहुत सहयोग कर रही है, मैडम मुझे बहुत अच्छे तरीके से सिखा रही हैं। मैं सिखने के बाद संस्था के सहयोग से स्वयं का पार्लर खोलूंगी जिससे मैं किसी पर निर्भर न रहूँ व स्वावलम्बी बन जाऊं तथा अन्य महिलाओं को भी ब्यूटी पार्लर का प्रशिक्षण दूंगी। मुझे यहां बहुत अच्छा लग रहा है।

नजमा बानो

शाहना परविन

मैं यहां सम्बल में मेहन्दी सीखने आई हूँ मुझे यहां आने के बाद बहुत अच्छा लगा। मेहन्दी यहां बहुत कम पैसों में लेकिन बहुत ही अच्छी सीखाते हैं। ऐसी पहली संस्था देखी है जहां कम पैसों में इतनी अच्छी और ''ब्राइडल मेहन्दी'' सीखने को मिल रही है। मैं मेहन्दी सीखने के बाद यहां जो भी अन्य कोर्स सीखाये जाते है वे सारे कोर्स सीखना चाहूंगी तथा मेरे आस–पास जो भी महिलायें है, उन्हें भी यह सब सीखने के लिए प्रेरित करूंगी।

अंहकार का भाव न रखूं नहीं किसी पर क्रोध करूं।
देख दूसरों की बढ़ती को कभी न ईर्ष्या भाव करूं,
रहे भावना ऐसी मेरी सरल सत्य व्यवहार करूं,
बने जहां तक इस जीवन में औरों का उपकार करूं।

विदेशी महिलाओं की कलम से

Prekasha (Priya) Chowdhary
Third-year Honors student
Southern Methodist University in Dallas, USA

I started collaborating with Sambal Sansthan in December 2015 and immediately fell in love with their mission. The organization exists to train and empower marginalized women on a daily basis. It recognizes that uplifting women has both social and economic benefits. Its deep understanding of the female struggle coupled with its implementation of innovative training methods is what made Sambal a perfect match for my Richter Fellowship research.

The women I spoke to taught me what it means to have courage. They taught me about love and faith. They showed me what it means to not give up in the face of adversity. I am forever thankful to Mrs. Sushila Bohra, Mrs. Bhanwar Kanwar, and the entire Sambal Family for opening their doors and sharing their stories.

होते है जिनमें हौंसले, मिलते है उनको रास्ते,
सपने तो वे होते है जो सोने भी नहीं देते।

Dedication

Audrey Ann Lavallee-Belanger

Undergraduate of Arabic and women Studies

University of North Carolina at Chapel Hill

I would like to dedicat this report to Bhawar Kanwar-- a woman whose dedication, passion and courage captivates the attention and respect of all around her, no matter their gender, age, or status and Saroj Kanwar Chouhan- a woman whose love, kindness, and smile brightened up any day and every day no matter how hot it was.

My report discusses the impact and roles of the Sambal Sansthan health initiative in 15 villages surrounding Jodhpur. Sambal Sansthan has developed community monitoring in these villages in order to involve the community members in the development of their own village.

These villages include : Bambor, Chokha, Golasani, Barli, Keru, Popawas, Lordi, Basni Seka, Rohilla Khalla, Nandra, Kancrala, Gentiyala, Khokriya, Devialya, and Shri Yadhengar.

Community monitoring has increased the accountability of Nurses, Ashas, and Doctors in the villages by involving villagers feedback and opinions. Sambla Sansthan works with community members to implement their plan for development. Each village has improved in various ways because Sambal Sansthan aggressively motivates the community members to solve problems and successfully make change.

Many of the women whom Sambal serves support their families on less than two dollars per day. These women have been abandoned by their husbands, widowed, or divorced and represent one of the most venerable parts of Rajasthani society. Sambal Sansthan provides them with sewing machines, sewing training, flour mills and other resources, offering opportunities to escape manual labor and extremely low wages.

Some of the interviews prepared fot the Evaluation of the work done by SAMBAL for self employment of women by - Audrey Ann Lavallee- Belanger University of North Carolina at Chapel Hill.

Twenty years ago, Lela's husband became addicted to opium and stopped supporting her family. Lela could not find work as a day labourer because she was from a general caste. She found some work picking local fruits and hand grinding flour in her village, but her income was insufficient to feed her family. A huge challenge for her initially was that she was completely

resource starved and desperately looking for a way to independently earn.

Fortunately, Sambal Sansthan's women's self employment program had just been introduce in her town and she applied for a flourmill and grant for electrictiy. Lela received her flourmill, grant, and four days operating a grocery store. During meetings with Sambal staff she learned critical information about business development and financial literacy.

Lela currently fully supports her family throught her flourmill and grocery shop. She said that Sambal provided her with the foundation that she needed to step out of the pain of poverty and social oppression. She earns 1800 INR per month from a job as a preschool teacher, 500 INR from her flourmill, and 5500 INR from her grocery store.

Raikia :- Twenty years ago, before her involvement with Sambal, Rukia earned as little as 14 Rupees per day doing construction day labor. During the time she found it impossible to cover the most basic expenses of ther family. She learned how to manage her small business throught meetings with Sambal representatives and other entrepreneurs from her village. She received a sewing machine from Sambal and has single handedly supported her children through her sewing business for the past twenty years. Finding enough clients in ther village represented the biggest challenge for her, but with the help the help of Sambal staff and fellow entrepreneurs she was able to find enough opportunities to provide for herself and her daughters.

Sajni :- Before starting her business, Sajni struggled to feed her children and was forced to sell many of sell personal possessions. With a 1500 INR grant (32 U.S. dollars) in 1992 from Sambal. Sajni opened a small handicrafts and provisions shop outside of her village. The income from her shop now fully supports her and her four children, and she can now afford to pay the medical expenses of her son, who is handicapped and requires special treatment. Simultaneously she purchase a Bafalow. Since her

involvement with Sambal Sansthan, she has become the leader of a community center that organizes women's vocational training workshops and, through her business, independent earns 3000 INR per month in 2010.

Sajni intends to reamin a resource for other women receive grants and want to start their own business. She will also continue to work at her handicrafts shop as it has increased her and her family's living standards considerably.

Chotabai : - One year ago, Chotabhai was working as a subsistence farmer without wages. She found that she could not feed her family with the grain she produced on her small farm. She applied for assistance from Sambal Sansthan and was previewed with a flourmill and training.

Chotabhai is currently earning 100 Rupees per day, grinding locally produced grains for farmers. She continues to receive support from Sambal and the women from her village she have received donations from Sambal.

Sambal's Work is crucial in that it addresses a major root fo poverty in Rajasthan : Women's unemployment. In a highly conservative society, womenn are discouraged from educationand work opportunities. This becomes a major issue if they become widows, their husband leaves them, or the husband's revenue is not enouth to sustain the family. **Sambal empowers the socially and economically underprivileged women by providing them with training at the sewing centers.** The women are then encouraged to become.

वही है जिन्दगी जो नाम पाती भलाई में
खुदी को छोड़कर जो पहुंच जाती खुदाई में
मिसाले बुलबुला है, जिन्दगी दुनियां ये फानी है
जो तुझसे हो सके, कर ले भलाई जिन्दगानी में

भामाशाह जो संस्था के सम्बल बने

सम्बल संस्थान अपने आप में एक नये सोच का शुभारम्भ है। भामाशाह संस्था को नहीं वरन् जरूरतमन्द महिलाओं को स्वयं अपने वरद्हस्त से दान नहीं उपहार देते हैं। वह भी ऐसा उपहार जिसमें रिटर्न गिफ्ट होता है, यानि अधिकांश महिलाएं उपहार की राशि का ¾ वापिस छोटे–छोटे किश्तों के रूप में देती हैं और ¼ उपहार रूप में प्राप्त करती हैं। इससे महिलाओं का आत्मसम्मान सुरक्षित रहता है तथा पुरूषार्थ करने की भावना को बल मिलता है। आइये कुछ भामाशाहों के बारे में जानें :–

1. **श्रीमती वल्लभ कुमारी सिंघवी** एवं उनके तीनों पुत्र श्री राजेन्द्र सिंघवी, दौलत सिंघवी, रविन्द्र सिंघवी पुत्री नीलम मेहता एवं अरूणा मेहता को जिन्होंने अपने सामूहिक निजी पुश्तैनी भवन को 2007 में महावीर विकलांग सहायता समिति को समर्पित कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया, आपका यह चिन्तन प्रशंसनीय ही नहीं अनुकरणीय है।

2. **साबू परिवार** : स्व. डी.पी. साबूजी 1990 से 2000 तक संस्था तथा महिलाओं के सम्बल बने। उनके स्वर्गवास के उपरान्त उनके सुपुत्र श्री गोपाल साबू जी ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुण्य तिथि पर बड़े समारोह का आयोजन कर महिलाओं को स्वरोजगार प्रदान कर उस परम्परा को आगे बढ़ाया और आगे भी बढ़ाने का आश्वासन है। बहुत–बहुत धन्यवाद।

3. **उद्योगपति श्री मोफतराज मोहनोत** : प्रथम विधिवत् कार्यक्रम का शुभारम्भ आपश्री के आर्थिक सहयोग से जैन स्थानक, पावटा के बाहर आँगन में 1008 आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज से आशीर्वाद लेकर हुआ।

4. **उद्योगपति श्री घेवरचन्द कानूनगो** : अपने पुत्र के विवाहोत्सव के दिन अपने निवास पर जिला कलेक्टर तथा डी.आर. मेहता की उपस्थिति में 100 महिलाओं को रोजगार प्रदान कर ही नहीं किया वरन् विवाह भोज में भी सम्मिलित कर नया उदाहरण प्रस्तुत किया।

5. **उद्योगपति श्री गणपत सांड** : आपने भी अपने उम्मेदराज चेरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से विवाहोत्सव की खुशियों के बीच पंजाब से आए संत शिरोमणि तथा अन्य अतिथियों की बीच गरीबों के घर में भी दीप प्रज्जवलित कर अनुकरणीय कार्य किया। कुछ अरसों बाद उन्होंने दूसरी बार भी अपने घर आँगन में इसकी पुनरावृति की।

6. **हीरावत परिवार, मुम्बई** : अध्यक्षा रेणु हीरावत का परिवार संवेदनशील है। 2008 से वे प्रतिवर्ष मुम्बई से पधार कर इस रोजगार में अपना मूक सहयोग प्रदान कर निष्ठा से इस कार्यक्रम में शरीक होते हैं।

7. **उद्योगपति श्री नीरज बजाज** : अपने निजी ट्रस्ट से 2004 में 100 तथा 2006 में भी 100 से अधिक महिलाओं को स्वरोजगार प्रदान कर बहिनों की झोली भर दी। इसमें पुखराज जी गुप्ता साहिब का भी सहयोग रहा।

8. **उद्योगपति श्री राजकुमार धूत** : आपने एक दिन रामदेवरा तथा दूसरे दिन जोधपुर में भी कुल 200 महिलाओं को सहयोग प्रदान कर संस्था को सम्बल प्रदान करने में प्रशंसनीय भूमिका निभाई।

इसके अलावा भी कई महानुभावों ने प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक सहयोग देकर अपनी सराहनीय भूमिका निभाई। इस तरह सेवा यज्ञ में लोग जुड़ते गए और कारवां आगे बढ़ता गया।

भविष्य में भी यह सहयोग बढ़ता रहे, इसी शुभ भावना से

चीड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घटियों नीर,
दान दिये सुर ना घटे, कह गये दास कबीर।

हम आभारी हैं

1. **जल स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग (PHED) जोधपुर** के जिनके अधिकारी श्री रूपारामजी घणेद (पूर्व मुख्य अभियन्ता), श्री भुवनेश माथुर (पूर्व मुख्य अभियन्ता), श्री डी. सी. विश्नोई (पूर्व मुख्य अभियन्ता), श्री रणजीतमल सिंघवी (अधि. अभियन्ता) श्री नेमाराम (अधि. अभियन्ता), श्री सत्यनारायण (अधि. अभियन्ता), श्री विकास मोघे (सहा. अभियन्ता) श्री शेखर हर्ष, श्री महीराम विश्नोई (सहा. अभियन्ता), श्री रणवीर सिंह शेखावत (सहायक) जिनके सहयोग से सम्पूर्ण राजस्थान तथा जोधपुर में बालेसर एवं लूणी में कार्य करने का अवसर मिला।

2. **विष्णु प्रकाश आर पुंगलिया कम्पनी** ने सूचना, शिक्षा तथा सांस्कृतिक विभाग (IEC) के तहत् जयपुर में 80, कोटा में 22, अजमेर में 112 तथा झालावाड़ में 56 गांवों में घर–घर पानी पहुंचाने तथा उसके संचालन के कार्यों को करने का अवसर प्रदान किया।

3. **मेघा कम्पनी, हैदराबाद** ने भी पाली जिले का IEC कार्यक्रम के तहत संस्था को 108 गांवों में काम करने का अवसर प्रदान किया। हमारे कार्यों की प्रशंसा सुनकर दूसरे राज्य भी हमें कार्य करने का मौका दे रहे हैं।

4. **डारा कन्स्ट्रक्शन कम्पनी** ने भी IEC कार्यक्रम को अंजाम देने अजमेर में तथा सीकर के गांवों में कार्य करने का अवसर प्रदान किया। गांव वाले हमें बहुत इज्जत देते हैं क्योंकि हम गरीबों की झोपड़ियों तक पानी पहुंचाने में सहयोग करते हैं।

5. **MIEL, मुम्बई** ने इसी कार्यक्रम में जैसलमेर के 106 गांवों में IEC कार्यक्रम करने का अवसर प्रदान किया। हमारे प्रयास से गरीबों की बस्तियों में भी बिना भेदभाव के पानी पहुंचा।

6. **जिला उद्योग केन्द्र (DIC), जोधपुर** : जिन्होंने आरी–तारी, पेचवर्क, सिलाई प्रशिक्षण, ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण तथा जेल की महिलाओं को व्यवसायिक प्रशिक्षण कराने में जिला महाप्रबन्धक तथा घरेलु योजना प्रबन्ध तथा सम्बन्धित अधिकारियों ने हमें अवसर दिया।

7. **नाबार्ड (NABARD) जोधपुर** : ने 200 महिला स्वयं सहायता समूहों को बनाने का अवसर प्रदान किया तथा महिलाओं को ग्रामीण उद्यमिता प्रशिक्षण दिलाने का प्रोजेक्ट भी आवंटित किया।

8. **NRHM** : राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के तहत् प्रयास संस्थान एवं ग्राविस जोधपुर ने मण्डोर पंचायत समिति के 45 गांवों में जननी सुरक्षा तथा संस्थागत प्रसव जैसे कार्य को करने का अवसर प्रदान किया।

9. **कट्स (CUTS)** : संस्थान ने लूणी पंचायत में पर्यावरण जागरूकता के लिए 10 गांवों में वृक्षारोपण, रैलियां, बच्चों की प्रतियोगिता तथा कार्यशाला करने का अवसर प्रदान किया।

मत किसी को दर्द का संसार दो,
मत फरेबों का कभी उपहार दो।
चाहते हो देना अगर तुम मेरे मित्र,
तो आदमी को आदमी का प्यार दो।।

औरत की कहानी औरत की जुबानी

मोना सोलंकी

हम परिवार में छः बहिने है, भाई नहीं है, पापा काफी भाग दौड़ करते है, लेकिन इतने बड़े परिवार को चलान आज संभव नहीं है। मैं उच्च शिक्षा पाना चाहती थी लेकिन हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति ऐसी नही थी मुझे **लेपटॉप** खरीदकर दे सके। मैंने सम्बल से लेपटॉप के लिये निवेदन किया जिससे मैं अपनी पढ़ाई भी पूरी कर सकूं और साथ मे मेरे पापा की मदद भी कर सकूं। अब मैं लेपटाप पर काम करके प्रति माह 3,000/– रू. कमा लेती हूं जिससे मैं अपने पापा की मदद करती हूं। मुझे बहुत अच्छा लगा मैं सम्बल की सदैव आभारी रहूँगी। मैं स्वयं अपनी कमाई से अपने शिक्षण का खर्चा भी निकाल लेती हूं तथा परिवार के लिये भी कुछ करने को सक्षम हो गई हूँ।

कामना भाटी

मैं नागौरिया बास आशापुरी माता के मन्दिर के सामने जोधपुर की रहने वाली हूं मैंने भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति महिला प्रकोष्ठ सम्बल के बारे में सुना। संस्थान में **ब्यूटी पार्लर** का कोर्स करने आने लगी। संस्थान में आकर बहुत अच्छा लगा। ब्यूटी पार्लर का पूरा प्रशिक्षण करने के बाद में घर पर पार्लर का काम करने लगी मुझे संस्थान से भी मदद मिली और आज मैं ब्यूटी पार्लर का कार्य करके मैं अपने परिवार को चलाने में सहयोग कर रही हूं जो आज मंहगाई की मार से त्रस्त है, परिवार मेरे इस प्रयास से बहुत अभिभूत है

अफसाना

अफसाना की पांच बहने है। परिवार की स्थिति बहुत दयनीय है। अफसाना की माता झाड़ू–पौछे आदि का कार्य करके अपने परिवार का खर्चा उठा रही हैं।

अतएव अफसाना अपने परिवार का सहारा बनना चाहती थी। उसने सम्बल कार्यक्रम में चल रहे **सिलाई प्रशिक्षण** से सिलाई का प्रशिक्षण लिया। उसके सिलाई सिखने के बाद उसके पास मशीन खरीदने के पैसे नहीं थे तब उसे संस्थान के माध्यम से **सिलाई की मशीन** दी गई। उस मशीन की सहायता से उसने सिलाई का काम प्रारम्भ किया। वह अब सिलाई करके हर महिने अपने परिवार को 3000 से 4000 रूपये की मदद करती है। इस प्रकार वह अपने परिवार का सहारा बनी।

रहमती W/o अब्दुल सदीक

निवासी : ग्राम नन्दवान, तहसील लूणी, जोधपुर

मेरे परिवार की स्थिति बहुत दयनीय थी। मेरे एक लड़का एवं 1 लड़की थी, पति के पास कोई कामकाज नहीं था, कभी काम पर जाता और कभी नहीं।

एक दिन पुष्पा भूतड़ा से मैं मिली तो, उन्होंने सम्बल संस्था के माध्यम से **किराणा के व्यवसाय** को खोलने में सहायता की एवं 5000 रूपये की राशि से किराणे की छोटी दुकान आरम्भ की। मैंने कड़ी मेहनत करके मासिक आय को बढ़ाया एवं पैसे बचाकर बच्चों की पढ़ाई एवं पालन–पोषण अच्छी तरह करने लगी। इसका सारा श्रेय सम्बल संस्था को है, जिन्होंने आर्थिक सहायता देकर हमें जीवन में खुशहाली दी है।

उपलब्धियां :

1. प्रतिमाह 6000 से 7000 मासिक आय हो गई। 2. अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे रही हूं। 3. परिवार को रोजगार से जोड़ दिया है।

इस संस्था के प्रति मैं बहुत आभारी हूं। इस संस्था ने मेरा जीवन खुशियों से भर दिया।

पप्पूदेवी W/o ढलदास वैष्णव

शादी होने के बाद हर महिला स्वप्न देखती है कि मैं घर एवं बच्चों की देखभाल करूंगी और मेरा पति मेरी आर्थिक सहायता करेगा। अच्छा धन्धा करके परिवार का पालन–पोषण करेगा लेकिन मेरे जीवन में ऐसा नहीं हुआ। पति कुछ भी नहीं कमाता था और मैं इसी कारण बहुत परेशान रहती थी। तभी एक दिन संस्था की कर्मचारी से मिली। उन्होंने संस्था के माध्यम से **आटे की चक्की** दिलवाई। मैं उस चक्की से अनाज पीस कर अपना गुजारा करने लगी और बच्चों को पढ़ाई भी करवाने लगी और हर माह 3000 से 4000 रूपये कमाने लगी। अपने रहने के लिए पक्का मकान भी बनवा लिया। जीवन में अच्छे लोगों के सम्पर्क में आना भी सौभाग्य की बात होती है। आज मैं गरिमामय पारिवारिक जीवन जी रही हूं। इसका श्रेय इस संस्था का है जिसने मेरे जीवन में आशा की लहर ला दी।

नीतू W/o बंशीलाल

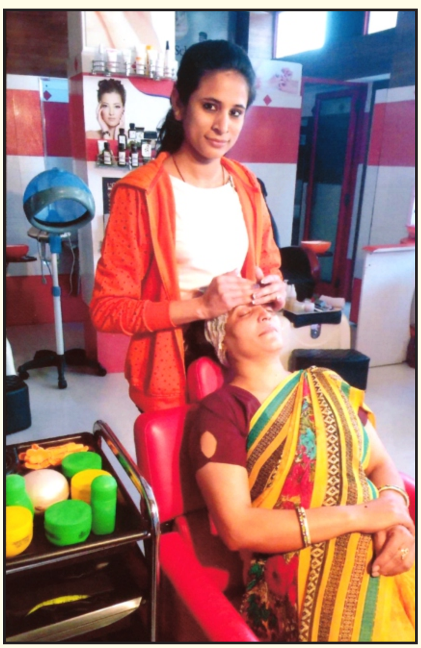

मेरा इस सस्था से सम्पर्क 2 वर्ष पूर्व हुआ था मेरे परिवार की स्थिति बहुत दयनीय थी। मै कुछ काम करके परिवार की मदद करना चाहती थी। अपने भाइयों को भी अच्छी शिक्षा दिलवाना चाहती थी।

इसी सोच में रहती थी कि कैसे ये सब सम्भव होगा। एक दिन मेरी पी.एच.ई.डी. के मार्गदर्शक श्री विकास जी ने सस्ंथा अधिकारी के बारे में बताया और मैं वहां पर **ब्यूटी पार्लर** सीखने जाने लगी और 6 महीने का कोर्स किया। तत्पश्चात् अपना ही काम शुरू करने की मन बनाया। इसी सोच को क्रियान्वित किया परियोजना अधिकारी ने और ब्यूटी पार्लर का व्यवसाय खोलने हेतु संस्था से ऋण दिलवाया। मैंने यह काम शुरू कर मैंने अपने परिवार एवं भाइयों को शिक्षा के खर्च को वहन किया। लगभग 6000 से 7000 की मासिक आय होने लगी और मेरे सपने पूरे होने लगे, ये सब संस्था के द्वारा ही सम्भव हुआ। मैं इस संस्था की बहुत ऋणी हूँ।

साईस्ता W/o रहीमद्दीन मोचियों की गली

मेरा इस संस्था से 5 वर्ष पूर्व सम्पर्क हुआ था। मेरे पति को टी.बी. की बीमारी थी उनके इलाज के लिए उनको अहमदाबाद ले गई। जिसमें काफी खर्चा हो गया। अब तो परिवार को पालना एवं बच्चों की खाने–पीने की व्यवस्था करना बहुत मुश्किल हो रहा था। उस समय मेडम शमा परवीन के द्वारा संस्था की जानकारी मिली और मैने अपने निराश जीवन के बारे मे बताया तो उन्होंने परियोजना अधिकारी से बातकर संस्था से **जूतों के कार्य** के लिए ऋण दिलवाया। ऋण लेकर मैने जूते बनाना आरम्भ किया और बाजार मे बेचने लगी। मेरा व्यवसाय ईश्वर की कृपा से बहुत अच्छा चलने लगा और हर महीने 3000 से 5000 रूपये कमाने लगी। संस्था द्वारा एक और सहायता मिली जिला उद्योग केन्द्र की सहायता से हस्तशिल्प मेले में स्टाल भी उपलब्ध करवाया जिससे मेरे रोजगार में चार चाँद लग गये और अब प्रत्येक वर्ष स्टाल की सहायता से 10000 से 12000 रूपये कमाकर अपने परिवार की अच्छी देख–रेख कर रही हूं। सच पूछो तो संस्था ने मेरा एवं मेरे परिवार का जीवन ऋण देकर सुधार दिया। मैं बहुत–बहुत आभारी हूं।

पारस कंवर W/o स्व. श्री महेन्द्र सिंह

जाति : राजपूत, निवासी : ग्राम जेपाली, तहसील पीपाड़, जिला जोधपुर

यह गांव जोधपुर से लगभग 70 किमी दूर हैं। मेरी जिन्दगी की कहानी बहुत ही अनोखी है। मेरा पीहर पक्ष गरीबी की हालत में था। ससुराल वालों ने गरीबी का फायदा उठाते हुए अपने बीमार बेटे की शादी मुझसे करा दी।

मेरे जीवन पर पहाड़ टूटा जब मेरा बेटा 6 माह का था और मेरे पति की मृत्यु हो गई। मेरी उम्र 22 वर्ष की थी। पति की मृत्यु के बाद ससुराल वालों ने भी सहारा नहीं दिया और मुझे परेशान करने लगे और घर से निकाल दिया। तभी मैंने सम्बल संस्था से सम्पर्क किया और संस्था सचिव ने मेरे ससुर से बात कर कानूनी जानकारी देकर वापस घर में रहने की जगह दिलवाई और अपने रोजगार हेतु **सिलाई मशीन** भी दिलवा दी। उसी से आज मैं मासिक 4000 से 5000 रूपये कमा रही हूं। समय–समय पर संस्था मुझे सहायता एवं सहयोग कर रही है। जो अनुकरणीय है। इसके लिए सम्बल संस्था बधाई की पात्र है। इसी सम्बल संस्था के सहारे मेरे जीवन में उल्लेखनीय परिवर्तन आया।

1. अपने मकान में अच्छा जीवन जी रही हूं। 2. बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलवा कर शिक्षित कर रही हूं। 3. वर्तमान में बच्चे, एक सातवीं में और एक चौथी कक्षा में पढ़ रहे हैं। मैं सम्बल संस्था के कारण ही बहुत खुशहाली का जीवन जी रही हूं।

गीता W/o राजूराम मेघवाल

मेरा परिवार बड़ा था, चार बच्चे थे, पति की मजदूरी से परिवार का पालन पोषण नहीं हो पा रहा था, उनको मजदूरी में बहुत कम पैसे मिलते थे।

मैंने सोचा मुझे भी कुछ करना चाहिए। लेकिन मैं अनपढ थी नौकरी मिलना सम्भव न था, लेकिन मुझे पूरी मन में आस थी कि मैं कुछ कर सकती हूं। मैंने सुशीला मैडम का नाम बहुत सुन रखा था और एक दिन मैं उनसे मिली और अपने मन की व्यथा बताई। मैं सब्जी की दुकान खोलना चाहती हूं मेरी मदद करो।

संस्था के माध्यम से 2009 में **सब्जी की दुकान** हेतु 3000/– की राशि मिली और मैंने सब्जी की दुकान खोलकर परिश्रम करके 2000 से 3000 रू मासिक कमाने लगी। बच्चों का अच्छी तरह पालन पोषण करने लगी। आत्मनिर्भर बनने पर बहुत खुशी मिल रही थी। मैं सम्बल संस्थान की बहुत आभारी हूं जिन्होंने हमारी मदद कर जीवन में खुशियां भर दी।

केशरीदेवी W/o स्वर्गीय बाबूलाल

जाति : वैष्णव, निवासी : ओसियां, जोधपुर

मेरे शादी के 18 वर्ष ही हुए थे कि मेरे पति का साथ छूट गया। छोटी उम्र, ससुराल का कोई सहारा नहीं। मेरे दो लड़के एवं 2 लड़कियां थी। जीवनयापन बहुत कठिन हो रहा था।

बस एक दिन जीवन के मोड़ पर संस्था सम्बल की लीलादेवी ने मेरी आप–बीती सुनी और संस्था के माध्यम से **कपड़े की दुकान** खुलवा दी और मैं कपड़े गांवों में जाकर बेचने लगी। प्रारम्भ में 2000, 3000 महीने की आय हो रही थी। लेकिन आज मैंने इस व्यवसाय में अपने बच्चों को भी लगा दिया है। अब मुझे 7000 से 10000 तक मासिक आय होने लगी है। ये देन सम्बल संस्था की है, अगर आज इस संस्था की सहायता मुझे नहीं मिली होती तो मेरा जीवन कभी का समाप्त हो जाता।

आज मुझे भगवान से भी ज्यादा इस संस्था ने जीवन में सहारा दिया है। मैं इस संस्था के प्रति नतमस्तक हूं। मेरा परिवार खुशहाली से भरा जीवन जी रहा है। सम्बल संस्थान को कोटि–कोटि धन्वाद।

सुशीला W/o देवीलाल महेश्वरी

गांव : भीकम कोर

मैं गांव भीकमकोर में रहती थी। लेकिन गांव में पूरी तरह कमाई न होने के कारण जोधपुर में आ गई। मेरा बेटा बहुत बीमार रहता था, पति कभी कमाते थे और कभी नहीं, बेटे के इलाज एवं दवाइयों में बहुत पैसे की आवश्यकता थी, बिना पैसों के कुछ भी नहीं हो सकता था। एक दिन मुझे लीला जी ने सम्बल संस्था की सचिव सुशीला जी के बारे में बताया और उनको मैंने अपनी आप बीती सुनाई।

किराणे की दुकान हेतु सन् 2002 में 4000 रू. की सहायता दिलवाई। मैंने किराणे की दुकान खोली। मैं महीने में 3000 से 4000 तक कमाने लगी। उसी कमाई से दुकान में सामान भी बढ़ाने लगी, मेरी कमाई 5000 से 6000 तक होने लगी। बच्चे का इलाज भी अच्छा हो गया और परिवार भी अच्छी तरह चलने लगा। निराशा जीवन में आशा की लहर आई। सम्बल संस्था की सहायता से यह सब सम्भव हुआ। मैं संस्था की अत्यंत आभारी रहूंगी।

गुड्डी W/o लक्ष्मण कुमार

निवासी : रोहिट, जिला जोधपुर

मेरा जीवन दुःख से सराबोर था, पति कमाता नहीं था तथा अफीम का नशा भी करता था। इसके लिए प्रतिदिन उसको पैसे चाहिए थे। परिवार में किसी भी प्रकार की सहायता नहीं करता। बच्चों का भी ख्याल नहीं रखता। परेशानियों भरा जीवन जी रही थी।

ऐसे जीवन से परेशान होकर अपने पिताजी के पास आकर रहने लगी लेकिन पिताजी की मृत्यु हो गई तो मेरा जीवन और दुःखी हो गया। निराश जीवन में एक दिन खुशी की लहर आई जब मैं सम्बल संस्था की भंवर कंवर से मिली और अपनी परेशानियों के बारे में बताया और भंवर कंवर ने संस्था की सचिव सुशीला जी बोहरा से मिलवाया। वो मेरे जीवन का भाग्यशाली दिन था। सम्बल संस्था की सहायता से मुझे **फैन्सी सामान** की दुकान खुलवाकर दी गई। उसी दिन से जीवन जीने की चाह हुई। बेटे को स्कूल भेजने लगी और मासिक 4000 रूपये कमाने लगी और आत्मनिर्भर बनी। इस संस्था ने मेरा जीवन ही बदल दिया और निराश जीवन में आशा की किरण से उजाला हो गया है।

लक्ष्मीदेवी W/o बाबूलाल

जाति : वैष्णव, निवासी : जोधपुर

मेरे पति बहुत बीमार रहते थे, एक्सीडेन्ट से उनके शरीर की हालत बहुत खराब हो गई। उनके इलाज एवं दवाइयों में बहुत पैसे की आवश्यकता प्रतिदिन होती थी और इसी कारण परिवार को चलाना बहुत मुश्किल हो रहा था।

बहुत परेशान रहने लगी, तभी मुझे किसी ने सम्बल संस्था के बारे में बताया और मैं महिला कर्मचारी से मिली और अपनी परेशानियां बताई।

संस्था द्वारा 2009 में **खींचियां, पापड़, बड़ियां** के रोजगार हेतु 4000 रूपये दिलवाएं। धीरे–धीरे 2500 से 3000 रूपये कमाने लगी। उस समय मेरी उम्र 52 वर्ष की थी फिर भी हिम्मत करके दिन रात मेहनत की जिससे कमाई 5000 रूपये तक हो गई। धीरे–धीरे श्री गणेश स्वयं सहायता समूह का गठन किया और 11 महिलाओं को जोड़ा। 25 लाख का ऋण लिया और मशीनों द्वारा इस रोजगार को बढ़ाया। इस रोजगार से प्रत्येक महिला को 5000 से 6000 रूपये तक की आय बढ़ी। मेरे बेटे–बहू इसी रोजगार में जुड़ गए और आज रोजगार बहुत अच्छा चलने लगा। कौन कहता है महिलाओं में प्रबन्धन व संगठन की शक्ति नहीं होती। मैं, मेरा उदाहरण देती हूं। आर्थिक मुक्ति महिला सशक्तिकरण का पहला चरण है। मैं संस्था को बहुत–बहुत धन्यवाद देती हूं।

कस्तूरीदेवी W/o हुकमीचन्द

जाति : जैन, निवासी : जोधपुर

मैं उत्तरप्रदेश में रहती थी। शादी के बाद पति जोधपुर ले आए। मेरी छोटी उम्र में शादी हो गई। यहां आकर पति को शराब पीने की बुरी आदत पड़ गई जिससे परिवार की आर्थिक दशा बहुत खराब हो गई। कुछ करना चाहती थी लेकिन बिना पैसे कुछ कार्य भी नहीं कर सकती थी। इधर–उधर भटकती रही। एक दिन मुझे सम्बल संस्था के बारे में बताया तो मेरे मन में कुछ आस जगी और मैं वहां जाकर संस्था की सचिव सुशीला जी से मिली और उन्हें अपनी आप–बीती सुनाई।

संस्था के माध्यम से **खींचिया पापड़** के कार्य हेतु मुझे कुछ राशि दी गई। कड़ी मेहनत कर मैंने इस व्यवसाय से अपने जीवन में खूब कार्य किया और मासिक 3000 से 5000 रूपये कमाने लगी तथा अपना एवं अपने परिवार का पालन–पोषण करने लगी। आज मेरा व्यवसाय अच्छा चल रहा है। जीवन में खुशहाली आई है। इस संस्था की आभारी हूं जिन्होंने मुझे जीवन में आर्थिक सहायता देकर व्यवसाय खुलवाया। सम्बल संस्था को बहुत–बहुत साधुवाद।

जन्नत W/o कालू खाँ

जाति : मुस्लिम, निवासी : ग्राम डेगाना, तहसील जिला नागौर

मेरे परिवार की स्थिति बहुत दयनीय थी। कारण था कि मेरे पास कोई रोजगार नहीं था। पति का सहयोग नहीं था। नशे की आदत के कारण पैसे भी घर को चलाने के लिए नहीं होते थे।

ऐसे निराशामय जीवन से बहुत परेशान थी तथा जोधपुर आकर सूरसागर रहने लगी। इसी आशा के साथ कि कोई भी काम करके बच्चों का पालन–पोषण कर पाऊंगी। मन में कुछ सोचो तो ईश्वर भी सहायता करता है। मुझे ज्योति सोलंकी मिली और उनके पास **बन्धेज का कार्य** सीखने लगी। जब काम सीख लिया तो उन्होंने मुझे संस्था के माध्यम से 5000 रूपये दिलवाए और मैंने अपना कार्य शुरू किया। दिन रात कड़ी मेहनत के साथ कार्य करने लगी और अपने 3 बेटियों एवं 1 बेटे को इसी धन्धे में जोड़ लिया। बन्धेज का कार्य अच्छा चलने लगा और मासिक आय 10000 से 12000 तक होने लगी। मेरी जिन्दगी इस संस्था के सहयोग से जन्नत हो गई। मैं एवं मेरा परिवार इस संस्था के सहयोग से सशक्त हुआ। इस संस्था का बहुत–बहुत धन्यवाद करती हूं।

यशोदा W/o स्व. थानाराम

जाति : मेघवाल, निवासी : सूरसागर

मेरी कम आयु में शादी हो गई थी, परिवार अच्छे से चल रहा था, पति मजदूरी पर जाते थे, लेकिन उनकी एक्सीडेन्ट में मौत हो गई। उस समय मेरी उम्र 22 वर्ष थी, मेरे जीवन में दु:खों का पहाड़ जैसे गिर गया हो, मेरे दो बच्चे थे, जिनका पालन पोषण करना कठिन होने लगा। समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ और बहुत परेशान रहने लगी। एक दिन में ज्योति सोलंकी से मिली। उन्होंने मुझे सम्बल संस्था के बारे में बताया तथा मुझे सुशीला मैडम से मिलवाया, जीवन की परेशानियाँ उन्हें बताई।

मेरे लिए वह जीवन का सुनहरा दिन था जब सम्बल संस्था द्वारा मुझे 2006 में रोजगार हेतु 4000 रू दिलवाये गये मैंने उन पैसों से **बैग बनाने का रोजगार** शुरू किया। बैग बनाकर बेचने लगी और महीने के 3000 से 4000 रू. कमाने लगी और परिवार का पालन पोषण अच्छी तरह से करने लगी, बच्चे स्कूल भी जाने लगे। निराश जीवन में अब खुशहाली आई तथा सम्बल संस्था की सहायता से हमारे परिवार को नया जन्म मिला। मैं अत्यंत इस संस्था की आभारी रहूँगी।

पुष्पा W/o शान्तिलाल

निवासी : ग्राम निमाज, तहसील जैतारण, जिला पाली

मैं अपने पति के साथ गांव में ही रहती थी और पति गांव में ही मजदूरी करते। लेकिन गांव में रोज मजदूरी नहीं मिलती तो रोज घर में पैसा भी नहीं आता। तो सोचा शहर जाकर मजदूरी करें। किराए का मकान लेकर शहर में रहने लगी लेकिन दुर्भाग्यवश शहर में भी आय का कोई साधन नहीं बन पा रहा था। किराया भी नहीं दे पा रही थी।

एक दिन ज्योति सोलंकी की मदद से संस्था से **मणिहारी कार्य** करने के लिए 4000 रूपये लिए। मैंने मणिहारी का कार्य करना शुरू किया और हर महिने 4000 से 6000 रूपये कमाने लगी। इस बात को 6 वर्ष हो गए हैं और इसी कमाई से अपने पुत्र को नर्सिंग की ट्रेनिंग दिलवाई एवं पुत्री को एम.कॉम. की शिक्षा दिलवाई। आज मेरा परिवार अच्छी तरह से जी रहा है। बचत भी कर लेती हूं और वर्तमान में 7000 रूपये महीना कमा लेती हूं। बचत करने की आदत भी अच्छी आदत है। ईश्वर भी उसी की मदद करता है जो अपनी मदद खुद करते हैं। ऐसे लोगों की मदद के लिए ईश्वर किसी न किसी को भेज देता है। आज संस्था ने हमारी मदद की तो जीवन ही बदल गया हैं।

चन्द्रा W/o उदयराज कलाल

निवासी : ग्राम रणसी, तहसील बिलाड़ा, जिला जोधपुर

मेरा जीवन परेशानियों से घिरा था क्योंकि पति शराब के नशे में मारपीट करता था और एक दिन घर से बाहर निकाल दिया। अब कोई सहारा न था। उदास एवं निराश होकर सोच रही थी कि कैसे जीवन को जिया जाए। बच्चों के कारण जिन्दा रहना भी जरूरी था। समझ नहीं आ रहा था कि बच्चों को लेकर कहां जाऊं। सम्बल संस्था की एक कर्मचारी मेरे गांव में ही रहती थी और उन्होंने मुझे इस संस्था से अवगत कराया और मेरी परेशानियों से भरे जीवन की कहानी संस्था सचिव को बताई। संस्था द्वारा मुझे **सिलाई मशीन** दी गई और उससे मैंने कार्य करना आरम्भ किया। इतना ही नहीं मुझे संस्था द्वारा एक स्कूल में चपरासी के पद पर भी कार्य करने के लिए लगवा दिया गया जिससे हर महीने के 4000 से 5000 रूपये कमाने लगी और बच्चों को शिक्षा के लिए स्कूल भी भेजने लगी। अब लगने लगा कि अच्छे दिन आ गए, अब मेरे पति में भी सुधार आ गया। मेरे साथ रहने लगे। संस्था ने मुझे सम्बल न दिया होता तो आज मैं इतनी सुखी कभी नहीं होती।

टीपू देवी W/o स्व. श्री भगाराम खींची

निवासी : ग्राम सालावास, तहसील लूणी, जिला जोधपुर

यह बात 1991 की है जब मेरी आयु 25 वर्ष की थी तब मेरे पति का स्वर्गवास हो गया। मेरे जीवन में दुःखों का पहाड़ टूट गया। रहने को छत नहीं, परिवार में 3 लड़कियां और 2 लड़के थे। परिवार को दो समय का खाना भी नहीं दे पा रही थी।

तभी एक दिन मुझे संस्था कर्मचारी मिलीं और उनको आपबीती सुनाई और उन्होंने मुझे **सिलाई मशीन** देने का कहा और पूछा गया क्या आप सिलाई करेंगी। मैंने सोच लिया कि मुझे मेहनत करनी हैं और 1991 में मुझे सम्बल संस्था द्वारा सिलाई मशीन दी गई। उस समय मासिक 500 से 600 रूपये कमाने शुरू किए। लेकिन धीरे–धीरे मैंने अपने बच्चों को भी सिलाई सीखा कर सिलाई का काम करवाना शुरू कर दिया। इस तरह हमारे परिवार में आय बढ़ी और परिवार का पालन–पोषण अच्छी तरह होने लगा। ये सारा खुशहाली का जीवन सम्बल संस्था द्वारा हो सका। आज हमारे परिवार में 20 से 25 हजार की आय है एवं सालावास में दो सिलाई की दुकानें हैं। हाथ में हुनर था और सम्बल संस्था की सहायता मिली तो आज जीवन यापन अच्छी तरह से हो रहा है।

सन्तोष W/o मेहराराम मेघवाल

निवासी : ग्राम जाजीवाल भाटिया, तहसील मण्डोर, जिला जोधपुर

मेरी शादी बहुत कम उम्र में हो गई थी। मेरी 3 लड़कियां और 1 लड़का था। मेरा एक लड़का भंयकर बीमारी से ग्रस्त हो गया, मुझे उसका इलाज करवाना था लेकिन मेरे पास उसका इलाज करवाने के पैसे नहीं थे, इसलिए मेरे परिवार का खर्चा भी नहीं चल रहा था। एक दिन मेरा सम्पर्क परियोजना अधिकारी से हुआ। संस्था के माध्यम से रोजगार के लिए आटे की चक्की उपलब्ध करवाई गई। **आटे की चक्की** से मेरे परिवार के लिए एवं बच्चे के इलाज के लिए पैसे की व्यवस्था होने लगी। मैंने धीरे–धीरे परियोजना अधिकारी के माध्यम से स्वयं सहायता समूह का निर्माण किया तथा बैंक से ऋण ले कर धन्धे में ओर प्रगति की, इससे आर्थिक स्थिति मजबूत होने लगी। अपने परिवार के लिए मकान की व्यवस्था भी हो गई। सम्बल संस्था का मुख्य उद्देश्य ही महिलाओं के लिए स्वरोजगार की व्यवस्था करना है। संस्था ने मेरे रोजगार हेतु आर्थिक सहायता प्रदान की जिससे आज मैं समाज एवं परिवार में आत्म सम्मान का जीवन जी रही हूं।

साईना W/o मो. नासीर

नैनी बाई का मन्दिर, उदयमन्दिर, जोधपुर

मुझे संस्था द्वारा **ब्यूटी पार्लर** की ट्रेनिंग मिली यहां पर बहुत कम फीस में ट्रेनिंग करवाते हैं जब मैं ट्रेनिंग के लिए इस संस्था में आई तब मेरे घर वालों ने बहुत मना किया, लेकिन मेरे पति का पूरा सहयोग और मैंने उनके सहयोग से ब्यूटी पार्लर की ट्रेनिंग पूरी की।

मैं भी कमाकर अपने पति की सहयोगी बनना चाहती थी और बच्चों को अच्छी शिक्षा देना चाहती थी। इसी विचारधारा से मैने ट्रेनिंग कर अपने ही घर में ब्यूटी पार्लर खोला और दिन रात कड़ी मेहतन कर अपने व्यवसाय को लगन निष्ठा के साथ आगे बढ़ाया, इस से मेरी मासिक आप 3000 से 4000 होने लगी। जिससे मेरे पति को सहयोग मिलने लगा और बच्चों को भी अच्छी शिक्षा देने के लिए विद्यालय भेजने लगी। सच में संस्था हम सब बहनों पर बहुत परोपकार कर रही है, मैं अपने जीवन में सदा इस सस्था की ऋणी रहूंगी।

गैरा W/o जसराज जाति सुथार

गांव : थवूकडा, मण्डोर, जोधपुर

मेरा इस संस्था से 8 वर्ष पूर्व सम्पर्क हुआ था उस समय मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति कठिन थी। परिवार मे 2 लड़कियां एवं 2 लड़के थे उनका पालन पोषण करना बहुत कठिन हो रहा था। पति का कोई सहयोग न था और नशा भी करता था। मेरे बेटे को एडस की बीमारी हो गई थी और उसकी मौत हो गई। मैं बहुत परेशान थी। परियोजना अधिकारी ने संस्था के माध्यम से **कपडे की दुकान** हेतु ऋण दिलवाया। मैंने इस रोजगार से जुड़कर दिन–रात कड़ी मेहनत की और मासिक आय 4000 रूपये तक कमाने लगी। मेरी आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगा और जीवन की इच्छाएं पूरी होने लगी। अपने परिवार के लोगों को भी इसी व्यवसाय में लगा लिया। आज मैं अच्छा जीवन जी रही हूं। परेशानी के दिनों में मुझे इस संस्था का सहयोग मिला।

With Best Compliments

Jain Optical Store

we care for your eyes...

Computerised Eye Testing

Gole Building, Sardarpura, Jodhpur (Raj.) **Ph. : 0291-2432418**

With Best Compliments

MOONLIGHT
TEXTILES

PROCESSORS OF BLEACHED AND DYED COTTON FABRICS

44, Heavy Industrial Area, Behind New Power House, Jodhpur
Tel. : 0291-2740098, 2741514 • Mob. : 98290-20046 • Email : prakashsancheti99@gmail.com

भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति महिला प्रकोष्ठ 'सम्बल' जोधपुर

की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में हार्दिक शुभकामनाएं।

माला राठौड़

मंजुला शाह

आशा सिघंवी

सुचिता कानूनगो

ललिता संचेती

चन्द्रा मेहता

ANANYA

भारतवर्ष का स्वर्णतीर्थ

सादगी को मिले अपूर्व आभा, आर.सी. के स्वर्ण से खिले नारी की शोभा!

स्वर्ण खरीदारी का अविस्मरणीय अनुभव...

- मनभावन वेडींग कलेक्शन
- टेम्पल ज्वेलरी आभुषणों की विस्तृत श्रृंखला
- 'अनन्य' डायमंड ज्वेलरी का अभुतपुर्व कलेक्शन
- 91.60 हॉलमार्क शुध्दता के गहनें
- हर डिझाईन में नयापन

< नयनतारा गेस्ट हाऊस :
स्वर्ण खरेदी के लिये बाहर गांव से आनेवाले ग्राहकों के लिये नि:शुल्क निवास व्यवस्था।

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स™

स्वर्णतीर्थ - सुभाष चौक, जलगाव (H.O.) 0257-2223903

स्वर्णतीर्थ - औरंगाबाद आकाशवाणी चौक, 0240-2244520	स्वर्णमॉल - जलगाव भवानी पेठ, 0257-2241353	स्वर्णतीर्थ - नासिक संभाजी चौक, 0253-2315644	स्वर्णतीर्थ - व्ही.आय.पी. रोड, नांदेड 02462-662500

जहाँ विश्वास ही परम्परा है *मानवीय आहार शाकाहार*

www.malhar.org

मुस्कुराते हुए रक्त दान कीजिए

जिससे कोई मुस्कुरा कर जी सके

पारस ब्लड बैंक
जोधपुर

रजत जयन्ती समारोह

चित्रमय झलकियां

भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति, महिला प्रकोष्ठ ''सम्बल'' के गौरवमयी 25 वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष में आयोजित रजत जयन्ती समारोह का आगाज 94.3 FM के प्रोग्रामिंग हैड रैक्स ने संस्थान क्यों, कहां, कैसे अबाध गति से ऊँचाइयों की उड़ान भर रहा है, उसकी शब्दों द्वारा झांकी प्रस्तुत की। स्टार स्टूडियो के प्रतिष्ठित फोटोग्राफर अनीस अंसारी ने LED Wall पर संस्थान के कार्यों की बोलती हुई चित्रमय झांकियां प्रस्तुत की जिससे गणमान्य अतिथियों सहित लाभान्वित महिलाओं को इस संस्थान के कार्यों की झलक देखने को मिल सके। तत्पश्चात् अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती को दीप प्रज्जवलित कर औपचारिक रूप से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

मुख्य अतिथि राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री माननीय श्री अशोक गहलोत ने कहा कि सेवा से बड़ा कोई कर्म नहीं होता, उन्होंने कहा कि राजनीति से ऊपर उठकर सुशीला जी समाज में महिलाओं के उत्थान के कार्य एवं प्रगति के लिए जो कार्य कर रहीं हैं, इससे दूसरों को प्रेरणा लेनी चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पूर्व नरेश श्री गजसिंह जी ने संस्था की ओर से महिलाओं को रोजगार मुहैया करवाने के लिए संस्था की तारीफ करते हुए कहा कि संस्था ने बहुत प्रगति की है तथा जोधपुर सहित 8 जिलों तक अपने कार्य का विस्तार कर लिया

है। ऐसे कार्यक्रम अन्य जिलों में होंगे तो वहां की महिलाएं भी स्वरोजगार पाकर सुखी जीवन बिता सकेंगी।

संस्था के मार्गदर्शक पद्मभूषण डी. आर. मेहता ने कहा कि मेरी माँ की जिज्ञासा ने एक संस्था को जन्म दे दिया। मैं इस संस्था के स्वरोजगार कार्यक्रम में अधिकांश उपस्थित होता हूं। जरूरतमन्द महिलाओं को स्वरोजगार देकर उन्हें स्वावलम्बी बनाने में जो आनन्द मिलता है, वह असली पूंजी है, इससे महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ता है। यह मैंने स्वयं लाभान्वित महिलाओं के 5–7 गांवों में जाकर देखा है। इस अवसर पर सम्बल संस्था की ओर से शॉल, माला, एवं अभिनन्दन पत्र से पूर्व मुख्यमंत्री अशोक जी गहलोत, पूर्व नरेश गजसिंह जी तथा सुशीला जी को सम्मानित किया। अभिनन्दन पत्र का वाचन श्री नौरतन मेहता ने किया।

इस अवसर पर सम्बल संस्थान की कार्यकारिणी के सभी सदस्यों ने भी सुशीला जी को शॉल, माला और अभिनन्दन पत्र से सम्मानित कर चकित कर दिया जिसकी खबर उन तक उन्होंने इससे पहले पहुंचने ही न दी। यह उनके विशेष प्रेम का सूचक है।

इसके पश्चात् सूरसागर विधायक सूर्यकान्ता जी व्यास ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह नई सोच एवं नया कार्यक्रम है जिसमें दान नहीं दिया जाता बल्कि महिलाओं को पैरों पर खड़ा होने के लिए अपनी पसंद का स्वरोजगार प्रदान कर स्वावलम्बी बनने का अवसर प्रदान किया जाता है। जिससे वे

अपने हुनर का उपयोग परिवार के उत्थान के लिए कर सकें। मुझे इस कार्यक्रम में आना अच्छा लगता है। मैंने सुशीला जी के कहने पर कार्यालय में एक हॉल का निर्माण विधायक कोटे से करवाया।

इस अवसर पर परियोजना

अधिकारी सहित 10 कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र तथा स्मृति चिन्ह देकर अतिथियों ने सम्मानित किया। जिससे सभी कर्मचारी बहुत प्रसन्न हो गए। इससे उत्साहित भंवर कंवर ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि मैं सुशीला जी के सम्पर्क में 1996 में आई। मुझे सहयोग देने के लिए उन्होंने अपने ट्रस्ट पारसमल सुशीला बोहरा चेरिटेबल ट्रस्ट में बतौर कार्यकर्त्ता रख लिया। मैं केवल 10वीं पास थी। ट्रस्ट का प्रोजेक्ट समाप्त होने के बाद मुझे सम्बल संस्था में कर्मचारी के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। मैंने कार्य के साथ एम.ए. (प्राइवेट) तक पढ़ाई कर ली। मेरी जिन्दगी संस्था में आकर बदल ही गई। मेरा आत्मबल बहुत विकसित हुआ। मेरे कार्यों से संतुष्ट होकर संस्था ने यहां मुझे परियोजना अधिकारी के रूप में 8 जिलों में कार्य करने का सुअवसर दिया

है। इसके लिए मैं संस्था को धन्यवाद देना चाहूंगी। मैं चाहती हूं कि संस्था के इस कार्य में एक आयाम और जुड़े, तथा बच्चों की शिक्षा में आर्थिक सहयोग देना प्रारम्भ करें कि ताकि लाभान्वित महिलाओं के होनहार बच्चों को अच्छी शिक्षा प्राप्त कर ऊंचे पदों पर पहुंचने का सुअवसर प्राप्त हो।

शहर विधायक कैलाश भन्साली ने परियोजना अधिकारी के भावभीने आह्वान को सुनकर बच्चों की शिक्षा में आने वाली कठिनाइयों से द्रवित हो कर अपने विधायक कोटे से शिक्षा हेतु 5 लाख रूपये देने की घोषणा की। यदि यह कार्यक्रम क्रियान्वित हो जाता है तो रजत जयन्ती वर्ष पर इस नए कार्यक्रम का शुभारम्भ होकर सम्बल के कार्यक्रमों में एक नया अध्याय जुड़ जाएगा। संस्था ने पहले महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ा, फिर इन जरूरतमंद महिलाओं के घर घर पानी पहुंचाने के लिए 8 जिलों के 704 गांवों में पानी के कार्य में पी.एच.डी. के आई.ई.सी. कार्यक्रम में पूर्ण भागीदारी निभाने कार्य कर रही है। यदि बच्चों की शिक्षा का यह कार्यक्रम इससे सम्बन्धित हो जाता है तो महिला सशक्तिकरण का इससे बड़ा कोई उदाहरण नहीं होगा।

फलोदी विधायक श्री पब्बाराम विश्नोई ने अपने बी.एड. के संस्मरण सुनाते हुए बताया कि सुशीला जी बी.एड. में मेरी गुरू

रही हैं। मैं उस समय भी उनके शिक्षण से बहुत प्रभावित था और आज उनके द्वारा रचित सेवा पथ को देखकर मैं स्वयं भी इस क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रयास करूंगा।

इस समारोह में संस्था सचिव सुशीला जी ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि सम्बल संस्थान निर्बल महिलाओं में जोश, उत्साह एवं आर्थिक सहयोग का सम्बल प्रदान कर हौंसलों की उड़ान दिलाने हेतु प्रतिबद्ध है। उसी को चरितार्थ करते हुए सैकड़ों महिलाओं ने न केवल स्वयं के जीवन में फूल खिलाये है बल्कि दूसरी महिलाओं को भी स्वालम्बी एवं आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हुए परिवारों में खुशहाली ला रही है।

तब तक यह संस्था 6400 महिलाओं को लाभान्वित कर चुकी है। उन्होंने यह भी बताया कि श्रीमती रेणु हीरावत एवं उनके पति राजीव हीरावत महिलाओं के स्वरोजगार हेतु आर्थिक सहयोग करते रहते हैं तथा घेवरचन्द जी कानूनगो ने अपने बेटे की शादी में 100 महिलाओं को रोजगार प्रदान कर अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया तथा श्री गोपाल साबू के पिताजी स्व. श्री डी.पी. साबू ने संस्था को प्रारम्भ से ही आर्थिक सहयोग देकर महिलाओं को स्वरोजगार प्रदान करने में अपनी अहम भूमिका निभाई थी तथा अपने पिताजी का अनुसरण कर उनकी पुण्यतिथियों पर अपनी ओर से आर्थिक सहयोग प्रदान कर सराहनीय कार्य कर रहे है

तथा आगे भी इस कार्यक्रम में सहयोग करने की भावना है। इस अवसर पर इन तीनों भामाशाहों का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर एक बालिका को लेपटाप, 120 सिलाई मशीनें, 8 पीकू मशीनें, 5 अम्ब्रेला मशीन, 23 स्वचालित आटा चक्की, 104 महिलाओं को ब्यूटी पार्लर, बन्धेज, जूतियों की दुकान, बड़ी–पापड़ उद्योग, जनरल मर्चेन्ट, आर्टिफिशियल गहने, मणिहारी, फल–सब्जी आदि की दुकानें खोलने हेतु आर्थिक सहयोग दिया।

इस अवसर पर संस्था की 25 वर्षों की गतिविधियों की स्थाई स्मृति रखने के लिए ''उड़ान'' स्मारिका का विमोचन किया गया। जिसमें न केवल कार्यक्रमों का ब्यौरा है बल्कि कर्मचारी, विभिन्न कौशलों का प्रशिक्षण लेने वाले प्रशिक्षणार्थियों तथा जेल में चलाए गए सिलाई प्रशिक्षण से लाभान्वित महिलाओं के उद्गार भी हैं।

नेत्रहीन विकास संस्थान की बालिकाओं ने सुन्दर स्वागत गीत प्रस्तुत किया तथा 7 वर्ष की बालिका ने माँ पर भावभीनी प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम में संस्था संरक्षक महारानी हेमलता राजे, भामाशाह संस्था अध्यक्षा श्रीमती रेणु हीरावत, भामाशाह घेवरचन्द जी कानूनगो, भामाशाह गोपाल जी साबू, बड़ौदा से आए निवेश पटेल एवं गणमान्य नागरिकों की शानदार उपस्थिति रही। सभा का संचालन श्रीमती मंजु जैन, श्रीमती माला राठौड़ एवं आदिल ने किया। धन्यवाद श्रीमती चन्द्रा मेहता ने ज्ञापित किया।

भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति
महिला प्रकोष्ठ 'सम्बल' जोधपुर
द्वारा सेवा पथ के गौरवशाली पच्चीस वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष में आयोजित
रजत जयन्ती समारोह

LIONS CLU

अनुदानकार्यक्रम

प्रथम पुण्यतिथि

समाज में ऐसे कितने लोग हैं जो यह कहें
कि मेरी बहनें और भाई जो आर्थिक दृष्टि से कमजोर हैं
उन भाई–बहनों की मदद करना,
वात्सल्य देना मेरा काम है, क्योंकि मेरे पास दो पैसे का साधन है।

- आचार्य हस्ती

* * *

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

* * *

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments

P.S. Surana

SURANA & SURANA ®

International Attorneys

Chennai I New York

International Law Centre, 61-63, Dr. Radhakrishnan Salai
Mylapore, Chennai - 600 004. India
Tel. : 91-44-2812 0000 • Fax : 91-44-2812 0001 • E-mail : intellect@lawindia.com

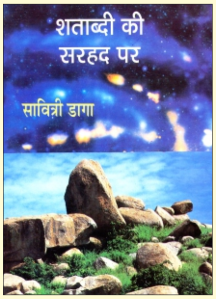

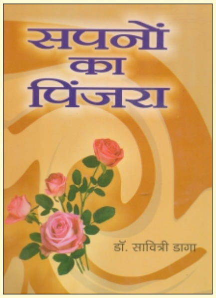

डॉ. सावित्री डागा

की बहुचर्चित पुस्तकों के नाम

- अमिट निशानी
- मुक्तावली
- सन्दर्भों से कटे हुए
- एक प्यास जिंदगी
- क्या फर्क पड़ता है।
- अपना अपना मोक्ष
- शताब्दी की सरहद पर
- आस्था के शिलालेख
- आधुनिक मुक्तक काव्य में नारी
- सार्थकता की तलाश (निबंध)
- प्रस्मिता की खोज
- सपनों का पिंजरा
- समय में हम
- अहम् से वयम् तक
- अग्नि कुसुम
- बूंद-बूंद में सागर
- जंग अभी जारी है